Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 19 अंक 10 30 अक्तूबर, 2019 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

नया मोटर व्हीकल एक्टः जनता के लिए वरदान या अभिशाप

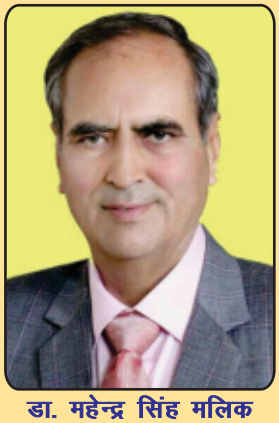

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

एक सितंबर 2019 से पूरे देश में नया मोटर व्हीक्ल एक्ट लागू हो गया है। लोग आंखें फाड फाडकर अखबारों में चालान की खबरें पढने लगते और एक तरह से हडकंप की स्थिति भी बनी। किसान के गड्डे ट्रैक्टर की बजाए वर्तमान कानून ने यातायात वाहन बना दिया। इस तरह से बीमा कंपनियों के यहां भीड लगी और पुलिसकर्मी तो चलते फिरते चालान काटने की मशीन ही दिखाई देने लगे। अभी तक के सबसे बडे चालाना का रिकॉर्ड दिल्ली पुलिस का नाम रहा है। दिल्ली पुलिस ने एक ट्रक ड्राइवर रामकिशन का चालान काटा और राम किशन नाम के ट्रक ड्राइवर को जुर्माने के तौर पर दो लाख पांच सौ रुपये का चालान भरना पड़ा। गुरुग्राम में ट्रैफिक पुलिस ने एक ट्रैक्टर–ट्रॉली का 59 हजार रुपये का चालान काट दिया। मीडिया तंत्र से उपलब्ध सूत्रों के अनुसार हाल ही में नारायणगढ़ (अंबाला) हरियाणा में मंडी में धान लेकर आये एक किसान के ट्रैक्टर का 3 लाख रुपये का चालान काट दिया गया। अकेले एनसीआर एरिया में पुलिस को जैसे नए मोटर व्हीकल एक्ट के नाते सरकार के खजाने को भरने की जिम्मेदारी ही मिल गई और उन्होंने चालान पर चालान काटकर त्राही त्राही मचा दी। अगर हरियाणा की बात करें कि यहां चुनाव के चलते पुलिस को साइलेंट रहने के मौखिक आदेश मिले हैं और फरीदाबाद और ग्रुरुगाम को छोडकर बाकी जगहों पर चालान काटने में कंजूसी बरती जा रही है लेकिन ये तय है कि हरियाणा की सरकार इसमें कोई बदलाव करने नहीं जा रही हैं।

आपको ये जानकार हैरानी होगी कि केंद्रीय मंत्री नीतिन गडकरी जिस एक्ट की पैरवी में दिन रात जुटे हुए हैं, उनकी ही कई सरकारें इसके खिलाफ दिखाई दी हैं। गडकरी का कहना है कि इससे हर साल हादसों में होने वाली डेढ लाख मौतों का सिलसिला रूकेगा। वहीं देश में कुल 11 राज्य भारी–भरकम ट्रैफिक जुर्माने के खिलाफ हो गए हैं। इनमें चार भाजपा शासित राज्य हैं। जुर्माना राशि में गुजरात में कटौती होने के अगले ही दिन भाजपा शासित राज्य उत्तराखंड ने भी जुर्माने की रकम घटा दी है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा ने भी राज्य के अधिकारियों को गुजरात की तर्ज पर जुर्माना घटाने का आदेश दिया है। इस बीच, महाराष्ट्र के परिवहन मंत्री दिवाकर राओते ने केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को पत्र लिखकर कहा– 'नए मोटर व्हीकल एक्ट में जुर्माने की राशि हद से ज्यादा बढ़ा दी गई है। केंद्र सरकार से अनुरोध है कि इस पर दोबारा विचार करे और जरूरी संशोधन करके जुर्माने की राशि को कम करे।' विपक्ष के साथ ही भाजपा शासित राज्यों में भी विरोध होता देख गडकरी ने कहा कि "लोगों की जिंदगी बचाना उनकी अकेले की जिम्मेदारी नहीं है। मुख्यमंत्री चाहें तो अपने राज्यों में जुर्माना घटा सकते हैं"। कांग्रेस शासित राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और पंजाब ने 1 सितंबर से लागू हुआ नया कानून अपने यहां लागू करने से इनकार कर दिया था। गुजरात सरकार ने नियमों में बदलाव कर जुर्माना राशि घटा दी। कई मामलों में आधी तो कुछेक में 90 प्रतिशत तक कम की गई है। प. बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी संशोधित मोटर वाहन कानून लागू करने से इनकार कर दिया। क्योंकि इससे लोगों पर बोझ पड़ेगा। इसलिए लागू ही नहीं करेंगे। राजस्थान सरकार ने संशोधित कानून के 33 प्रावधानों में से 17 में बदलाव कर जुर्माना राशि कम करने का प्रस्ताव तैयार कर लिया है। जुर्माने में 50 प्रतिशत तक की कटौती की गई है। ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने कहा था कि लोगों को तीन महीने का वक्त देना चाहिए। अब नाकों पर दोपहिया चालकों को हेलमेट देकर जागरूक किया जा रहा है। दिल्ली सरकार भी मौके पर चुकाए जाने वाले जुर्माने को लेकर सभी पक्षों के साथ विचार कर रही है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा कि वह इस बारे में केंद्र सरकार से बात करेंगे। उन्होंने मंगलवार को कहा था कि 13 अक्टूबर के बाद संशोधन को लेकर विचार किया जाएगा। भाजपा के नेतृत्व वाली गोवा सरकार ने अभी नए नियम लागू करने से इन्कार किया है। सरकार ने कहा कि भारी–भरकम जुर्माने लगाने से पहले सड़कों को गड्ढ़ा मुक्त करना उसकी नैतिक जिम्मेदारी है। परिवहन मंत्री मॉविन गोदिन्हो ने कहा कि सरकार दिसंबर तक सभी सड़कों की मरम्मत करवाएगी। उसके बाद जनवरी से संशोधित मोटर वाहन कानून लागू किया जाएगा।

अब आइए नए मोटर व्हीक्ल एक्ट के प्रावधानों पर चर्चा करते हैं।

1. नए मोटर व्हीकल एक्ट के मुताबिक ड्राइविंग लाइसेंस और व्हीकल रजिस्ट्रेशन के लिए आधार अनिवार्य होगा। ये अलग बात है कि आज तक सरकार डी एल बनवाने और व्हीकल रजिस्ट्रेशन के लिए कोई भी पारदर्शी और भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था कायम नहीं कर सकी है। रजिस्ट्रेशन के समय व्यापक स्तर पर फैला भ्रष्टाचार और अनावश्यक कागजी कार्रवाई में सिस्टम फंसा हुआ नजर आता है। आधार की अनिवार्यता पर खुद सरकार के पास ये जवाब नहीं है कि जब सुप्रीम

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

कोर्ट तक में खुद सरकार स्वीकार कर चुकी है कि इसको लेकर बाध्य नहीं किया जा सकता है तो फिर डी एल में इसकी अनिवार्यता क्यों कर दी गई है।

2. बगैर हेलमेट या ओवरलोड दोपहिया वाहन पर 3 महीने के लिए ड्राइवर लाइसेंस अयोग्य। बगैर हेलमेट पर 1 हजार रुपए और ओवर लोडिंग पर दो हजार रुपए जुर्माना। अब आप देखिए, हरियाणा में ही ऐसे सैकडों गांव हैं जहां या तो बसों में परिवहन की सुविधा नाममात्र की है या है नहीं। ऐसे में कोई इंसान अगर अपने परिवार को लेकर सहज सुलभ बाइक को लेकर निकला तो वो सीधे सीधे पुलिस की नजर में दोषी होगा। बगैर हलमेट अगर कोई चलता पाया तो पहले जहां सौ रुपये का जुर्माना था वहीं अब एक हजार रुपये देने होंगे।

3. नाबालिग के वाहन चलाते समय हादसा होने पर अभिभावक को 25 हजार रुपए का जुर्माना भरने के साथ–साथ 3 साल की सजा हो सकती है साथ ही जुवेनाइल एक्ट के तहत मामला चलेगा। ये सबसे बडा मसला है और इस पर व्यापक चिंतन की जरूरत थी। आजकल कंपीटिशन का जमाना है और 8वीं के बाद से ही बच्चों को टयूशन वगरैहा के लिए स्कूटी आदि साधनों का सहारा लेना ही पडता है। ऐसे में 25 हजार रुपये का जुर्माना एक तरह से उत्पीडन ही है। वहीं माता–पिता को अगर आपने जेल भेज दिया तो बच्चों की परवरिश कौन करेगा? एक मध्यमवर्गीय परिवार को ही आपने 25 हजार का जुर्माना लगाकर छोड दिया तो भी उसके तो महीनों का बजट ही गडबडा जाएगा।

4. अब हिट–एंड–रन के केस में सरकार पीड़ित के परिजनों को 2 लाख या इससे ज्यादा का मुआवजा देगी। ये रकम पहले 25,000 थी। ये बहुत अच्छी बात है लेकिन दुर्भाग्य से हिट एंड रन के केस सुलझाने में पुलिस की सक्रियता और कामयाबी लगभग जीरो ही है। ना तो सीसीटीवी कैमरे हैं और ना ही पुलिस के पास इतने संसाधन की हिट एंड रन के केस को सुलझाया जा सके।

5. रोड रेगुलेशन्स के उल्लंघन पर अब 100 नहीं, 500 रुपए का जुर्माना। टिकट के बिना ट्रैवल करने का जुर्माना 200 से बढ़कर 500 रुपए। रोड रेगुलेशन अब तय कैसे होंगे किसी को नहीं पता।

6. अथॉरिटी के आदेशों के उल्लंघन पर जुर्माना 500 से बढ़ाकर 2,000 रुपए। लाइसेंस के बिना अनाधिकृत वाहन इस्तेमाल करने पर जुर्माना 1,000 से बढ़ाकर 2,000 रुपए। ये भी विवादित हैं, अक्सर पुलिस से सवाल पूछना ही अनुशासनहीनता मान ली जाती है। लाइसेंस न होने की सूरत में क्या एक हजार रुपये का जुर्माना नाकाफी था। अगर बंदा प्रशिक्षित है और लाइसेंस घर पर छूट गया है तो 2000 रुपये का जुर्माना किस कदर जायज ठहराया जा सकता है। लाइसेंस होने की सूरत में एक्सीडेंट नहीं होंगे इसकी भी गारंटी कौन दे सकता है।

7. लाइसेंस के बिना गाड़ी चलाने पर जुर्माना 500 से बढ़ाकर 5,000 रुपए। ड्राइविंग क्वालिफिकेशन के बिना ड्राइव करने पर जुर्माना 500 से बढ़ाकर 10,000 रुपए। लाइसेंस नहीं होने की सूरत में 5000 हजार रुपये का जुर्माना गैरवाजिब है। लाइसेंस और हादसे का कोई मेल नहीं है। मौका मिलना चाहिए अगर किसी का लाइसेंस घर छूट गया है तो ला कर पेश करने का। अब बात करते हैं ड्राइविंग क्वालिफिकेशन की तो इसमें फैला भ्रष्टाचार और खराब व्यवस्था को जब तक दुरुस्त नहीं किया जाता है तब तक इसका दुरुपयोग ही होगा।

8 ओवरसाइज्ड व्हीकल पर 5,000 का जुर्माना। ओवर स्पीडिंग पर जुर्माना 400 से बढ़ाकर एलएमवी के लिए 1000 का जुर्माना और मीडियम पैसेंजर व्हीकल के लिए 2,000 का जुर्माना। ओवरसाइज्ड व्हीकल से आप अगर कुछ नहीं समझें हैं तो अपने आस–पड़ोस में गाडियों में थोडा बहुत मोडिफिकेशन करवाकर छोटा मोटा काम धंधा करने वालों को ही देख लें। कोई बर्गर बेच रहा है तो कोई एक्सपोर्ट के पुराने कपडे। अब सभी का पुलिस जब चाहे 5000 का जुर्माना कर देगी। ओवर स्पीडिंग पर जुर्माना ठीक बात है लेकिन देश की अधिकांश सडकों पर आपको गति सीमा के बोर्ड ही नहीं मिलेंगे। एक सर्वेक्षण के अनुसार तेज ड्राइविंग के कारण कम हादसे हुए है जबकि सड़कों की खराब हालात व वाहनों की खस्ता हालत के कारण ज्यादा रोड हादसे होते हैं। इसके साथ ही वाहनों की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। वर्ष 1991 में 19 लाख से बढ़कर वाहनों की संख्या अब 25 करोड़ हो चुकी है जिससे खराब सड़कों पर हादसे बढ़ रहे हैं।

9. खतरनाक ड्राइविंग करने पर जुर्माना 1,000 से बढ़ाकर 5,000 रुपए। शराब पीकर गाड़ी चलाने पर 2 हजार की बजाय 10 हजार रुपए जुर्माना लगेगा। शराब पीकर गाडी चलाने वालों पर दो हजार की बजाय अब 10 हजार रुपये जुर्माना कर दिया गया है जिसका स्वागत किया जाना चाहिए। बेशक इस जुर्माने को तो और भी बढा देते क्योंकि शराब पीकर गाडी चलाना सीधे सीधे दूसरे लोगों की जिंदगी के साथ खिलवाड करने जैसा है। इसके साथ साथ पुलिस को ज्यादा से ज्यादा एल्को सेंशन मशीने भी दिए जाने की जरूरत है ताकि पुलिस इसकी आड में अपनी खुन्नस निकालने का काम ना करे।

10. स्पीडिंग या रेसिंग करने पर 2,000 नहीं 10,000 हजार भरने होंगे। आजकल मेट्रो सिटी में युवाओं का इस तरह के कतरब दिखाते हुए हादसे का शिकार होना आम बात है।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

ये जुर्माना बिल्कुल सही है और पुलिस को ऐसे लोगों पर नजर रखनी ही चाहिए।

11. बिना परमिट के गाड़ी चलाने पर 5000 से बढ़ाकर 10,000 रुपए। ये भी बिना सोचे समझे ही बढा दिया है। आज भी भारत की बडी आबादी मजबूरी में ऐसे वाहनों में सवार होती है और एक तरह से ये ही परिवहन व्यवस्था को थामे हुए हैं। सरकार को ज्यादा से ज्यादा परिवहन की सुविधाएं बढानी चाहिए उसी के बाद इतने कडे नियम लेकर आने चाहिए।

12. कैब एग्रीगेटर्स जैसे ओला, उबर के वाहन लाइसेंसिंग शर्तों के उल्लंघन पर कंपनियों पर 25,000 से 1 लाख रुपए तक का जुर्माना। सीट बेल्ट न लगाने पर जुर्माना 100 रुपए से बढ़ाकर 1,000 रुपए कर दिया गया है। दोनों ही नियम सराहनीय हैं। सीट बैल्ट लगाना अनिवार्य होना ही चाहिए।

13. एंबुलेंस जैसी आपातकालीन गाड़ियों को रास्ता न देने पर 10,000 रुपए का जुर्माना या फिर 6 माह की जेल। बिना इंश्योरेंस के 1,000 से जुर्माना बढ़ाकर 2,000 रुपए कर दिया गया है। एंबुलेंस को रास्ता न देने वाला नियम सराहनीय है लेकिन इश्योरेंस नहीं होने की सूरत में जुर्माना दोगुना करने से क्या फायदा होगा समझ से परे है। थर्ड पार्टी बीमा भी जरूरी है। ड्राइवर और क्लीनर का थर्ड पार्टी इंश्योरेंस होगा। हादसे में मृत्यु पर 50 हजार से 5 लाख रुपए तक मुआवजे का प्रावधान है। अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत पर 25 हजार से 2 लाख और घायल होने पर साढ़े 12 से 50 हजार रुपए का मुआवजा दिया जाएगा।

14. मोटर व्हीकल एक्सीडेंट फंड बनाया जाएगा, जिसमें सड़क पर चलने वाले सभी चालकों का इंश्योरेंस होगा। इसका इस्तेमाल घायल के इलाज और मृत्यु होने पर परिजनों को मुआवजा देने के लिए किया जाएगा। हादसे में घायल का फ्री में इलाज करना होगा।

15. लर्निंग लाइसेंस के लिए पहचान पत्र का ऑनलाइन वेरीफिकेशन अनिवार्य। कमर्शियल लाइसेंस 3 के बजाय 5 साल के लिए मान्य होंगे।

लाइसेंस रिन्यूवल अब खत्म होने के एक साल के अंदर कराया जा सकेगा। ड्राइवरों की कमी पूरी करने के लिए ड्राइवर ट्रेनिंग स्कूल खोले जाएंगे। नए वाहनों का रजिस्ट्रेशन डीलर करेगा। नए वाहनों का रजिस्टेशन अब भी डीलर ही करता है कोई नई बात नहीं है। लाइसेंस रिन्यू कराने के लिए सालभर के नियम की अनिवार्यता भी समझ से परे है।

अब बात करते हैं किसानों के जहाज ट्रैक्टर की। चौधरी देवीलाल ने किसानों के ट्रेक्टर को कभी नियमों में नहीं बंधने दिया लेकिन नए मोटर व्हीक्ल एक्ट की जद से ये भी नहीं बचा है। ध्यान रहे कि ट्रैक्टर या ट्राली को भी नए मोटर एक्ट के तहत भारी वाहन माना गया है और इसलिए इस पर भी भारी वाहन के सभी नियम लागू कर दिए गए हैं। अब ट्रैक्टर–ट्राली को चलाने के लिए आपके पास भारी वाहन चलाने का परमिट यानि लाइसेंस होना जरूरी कर दिया गया है। ऐसा न होने कि स्थिति में आप पर भारी जुर्माना या आपको जेल हो सकती है जो एक तरह से किसानों के लिए आघात जैसा है। ध्यान रहें कि बिना परमिट के अगर आप द्वारा ट्रैक्टर या ट्राली चलाते हुए किसी की दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है तो जमानत नहीं मिलेगी। इस स्थिति में आपको जुर्माना या जेल या दोनों की सजा होना तय है। खेती कार्यों में उलझे किसान वैसे ही दो जून की रोटी के लिए संघर्ष कर रहे हैं और ऐसे में उनको परमिट जैसी व्यवस्थाओं में उलझाकर रखना कौन सी अच्छी बात है। इतना ही नहीं अब नया मोटर एक्ट के आने के बाद से ट्रैक्टर या ट्राली के लिए बीमा और फिटनेस सर्टिफिकेट होना अनिवार्य हो गया है। ट्रैक्टर का सही कंडीशन में ना होने पर गैर कानूनी तौर पर इस्तेमाल करने पर आपको भरी जुर्माना होगा। किसान के पास पुराना ट्रैक्टर इसलिए होता है क्योंकि नया खरीदने की उसकी हैसियत ही नहीं होती और ऐसे में उस पर इतने सख्त नियम कहां तक जायज हैं। खेती कार्यों से समय निकालकर आप अगर कोई बाहर का काम हाथ में लेकर अपना घर गुजारा कर लें तो वो भी अब नहीं हो पाएगा क्योंकि निजी ट्रैक्टर का प्रयोग गैर कानूनी तौर पर कमर्शियल पर्पस के लिए करना नए मोटर एक्ट में इसकी मनाही है। इसी तरह से ट्रैक्टर–ट्राली पर सवारी लेकर जाना भी मना है तो आप खेत मजदूरों तक को उसमें नहीं चढा पाएंगे और ऐसा करने की स्थिति में भारी जुर्माना भरना पड़ सकता है।

नए मोटर व्हीकल एक्ट की विवेचना करते हुए साफ हो गया है कि वर्तमान परिस्थितियों में ये एक्ट आम मध्यमवर्ग कि कमर तोडने वाला एक्ट है। इसे लागू करने से पहले सिस्टम को दुरुस्त किया जाना चाहिए था और ऐसा नहीं होने की सूरत में जनता में ये असंतोष का ही पर्याय बनेगा और फिलहाल तो इसके नतीजे कुछ ऐसे ही असंतोषजनक आ रहे हैं। नया मोटर व्हीकल एक्ट लागू करने के साथ–साथ सरकार द्वारा सड़कों के हालात को सुधारने, जनता–पुलिस में उचित तालमेल स्थापित करने, पुलिस तंत्र को यातायात व सुरक्षा की आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराने, दुर्घटना की स्थिति में पीड़ित व वाहन की सुरक्षा व समय पर चिकित्सा आदि उपलब्ध कराने की भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए। अपनी मुस्तैदी और चकाचौंध कार्यगुजारी दिखाने हेतू नए ट्रैफिक कानून लागू होने से मात्र पहली सितंबर से 16 सितंबर तक केवल पंचकूला में 2000 से अधिक ट्रैफिक उल्लंघनों में 1307 चालान किए गए, इनमें 71 तेज रफ्तारी, 9 शराब के सेवन पर ड्राइविंग, 288 गलत साईड ड्राइविंग, 194 बिना सीट बैल्ट

लगाए, 20 दो पहिया पर तीन सवारी, 272 बिना हेल्मेट, 132 गलत पार्किंग, 31 बिना लाइसेंस तथा 14 बिना कागज पत्र, जिससे स्पष्ट है कि सर्वाधिक चालान दो पहिया चालकों के ही हैं। लेकिन हफ्ता 10 दिन जोर–शोर फिर वही स्थिति। मोटर व्हीकल एक्ट लागू करने से पूर्व किसी ने भी जग भलाई जन साधारण पर इसके प्रभावों और सड़क सुरक्षा की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। एक्ट की प्रथम 63 क्लाजें केवल इसी पे निहत हैं, लेकिन इससे देश भर में पुलिस के लिए नई दुश्वारियां शुरू हो जाएगीं तथा जनता–पुलिस में अविश्वास बढ़ेगा। नीदरलैंड की राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा एजेंसी ने सर्वेक्षण कर बताया है कि जुर्माना बढ़ाना समस्या का हल नहीं है। मात्र एक आखरी हथियार है जिससे पुलिस को दैनिक कार्यों में भी जन असहयोग पनपेगा। उचित सुरक्षा व्यवस्था के लिये आवश्यक पुलिस की कमी सर्वविदित है। चंडीगढ़ में एक लाख आबादी पर 65 पुलिसकर्मी हैं। दिल्ली में 30, पंजाब–हरियाणा में मात्र 5 सिपाही ही हैं जो सड़क पर 20 करोड़ वाहनों पर कार्यरत हैं। वर्ष 2015 में ''पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो ने सुझाया था कि पुलिस के पास ऐसा साजो–सम्मान विशेष क्षेत्र के वाहनों की गणनानुसार होना चाहिए जबकि इसका तीसरा हिस्सा भी बमुश्किल उपलब्ध है।

उपरोक्त तथ्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि जल्दबाजी में सार्वजनिक भावनाओं के विपरीत जन–आर्थिक व्यवस्था के बिना अनुमान तथा परामर्श के बनाया गया कोई भी कानून सफल नहीं हो सकता है। वर्तमान विधेयक शासक दल ने संसद में बहुमत का फायदा उठाकर जल्दबाजी में पास कर दिया और यह विषय कनंक्रट लिस्ट में आता है इसलिये 50 प्रतिशत से ज्यादा राज्यों से इसको लागू करने से पहले स्वीकृति लेनी चाहिए थी या विधानसभाओं में विस्तृत चर्चा होनी चाहिए थी। अतः आज इसका राष्ट्र के हर कोने में विरोध हो रहा है। एक पूर्व पुलिस महानिदेशक ने जोकि केंद्र में भी एक विशेष भ्रष्टाचार विरोधी विभाग में प्रमुख भी रह चुके हैं, ने इस कानून पर ट्वीट करके लिखा है कि नया वाहन अधिनियम 2019 पुलिस वालों का 8वां वेतन आयोग है।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

किसानों के काम की एक तकनीक मोबाइल ऐप्लीकेशन

मोबाइल तकनीक से अब किसान भी जुडने लगे हैं तो इनसे जुडी जानकारियां किसानों तक पहुंचाने में मोबाइल अब आम जनमाध्यम बन रहा है। किसानों को इस तकनीक से फायदा पहुंचाने के लिए अब देश दुनिया में काफी बदलाव हो रहे हैं और आज यहां पर हम ऐसे ही मोबाइल एप के बारे में आपको बताएंगे जो किसानों को फायदा पहुंचा सकते हैं। मोबाइल ऐप का नाम है कि सीएचसी फार्म मशीनरी एप।

केंद्र सरकार ने हाल ही में एक मोबाइल ऐप जारी किया है। इस मोबाइल ऐप के जरिए किसान आसानी से कृषि मशीनरी किराए पर मांगा सकते है। इस ऐप के पीछे केंद्र सरकार की यह मंशा है कि देश के उन किसानों को सही समय पर कृषि मशीनरी उपलब्ध कराया जाएँ जो कृषि मशीनरी खरीदने में सक्षम नहीं है या फिर लघु एवं सीमांत किसान है। गौरतलब है कि इस ऐप के जरिए ओला–उबर की तर्ज पर खेती करने के लिए जिन–जिन उपकरणों की जरुरत होती है उसे कम पैसे में किसानों को दिया जाएगा। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इस ऐप का नाम सीएचसी फार्म मशीनरी मोबाइल ऐप दिया है। सीएचसी फार्म मशीनरी मोबाइल ऐप से पहले ट्रैक्टर की बुकिंग के लिए भी एक ऐप जारी किया जा चुका है।

बता दे कि जब ऐप को लॉन्च किया जा रहा था उस मौके पर केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि इसके जरिये किसान अपने खेत के 50 किलोमीटर दायरे में उपलब्ध कृषि उपकरण को मंगा सकेंगे। भारत की भाषाई विविधता को देखते हुए ऐप को बहुभाषी बनाया गया है। यह ऐप हिंदी और अंग्रेजी समेत 12 भाषाओं में उपलब्ध है। तोमर ने कहा कि मंत्रालय ने सभी कृषि मशीनरी कस्टम सेवा प्रदाताओं और किसानों को एक मंच पर लाने के लिए एंड्रायड प्लेटफॉर्म पर मोबाइल फोन ऐप विकसित किया है। कृषि मंत्री ने कहा कि इस मोबाइल एप्लीकेशन पर अभी तक 40 हजार से भी अधिक कस्टम हायरिंग सेंटर पंजीकृत हो चुके हैं। इनके पास 1.20 लाख से भी अधिक उपकरण उपलब्ध हैं। अगर किसी किसान को कृषि यंत्रों पर छूट के लिए आवेदन करना है, तो वह सीएससी (कॉमन सर्विस सेंटर) पर जाकर आवेदन कर सकता है। गौरतलब है कि अगर आप कृषि मशीनरी से जुड़ा बिजनेस करना चाहते हैं, तो कस्टम हायरिंग सेंटर योजना से जुड़कर हर साल लाखों रुपये की कमाई कर सकते हैं । इसके लिए केंद्र सरकार की ओर से 80 फीसद तक की सरकारी आर्थिक सहायता मिलेगी। इसे हम आम शब्दों में कृषि यंत्र बैंक भी कह सकते

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

हैं। सीएचसी फार्म मशीनरी ऐप बिल्कुल ओला और उबर ऐप की तरह है। मशीनरी का दाम सरकार तय नहीं करेगी। यह सुविधा 5 से 50 किलोमीटर के बीच मिलेगी। सरकार ने इसे कंपटीशन के लिए छोड़ दिया है ताकि मार्केट में कंपटीशन बना रहेगा तो किसान को सस्ती और अच्छी सेवा मिलेगी। यदि आपके पास एक भी कृषि यंत्र है तो भी आप उसे किराये पर देने के लिए ऐप में पंजीकरण करवा सकते हैं। इसके साथ ही किसान साइबर कैफे आदि से भी आवेदन कर सकते हैं, जिसके लिए किसान को एग्री मशीनरी.इन पोर्टल पर आवेदन करना होगा। यह ऐप गूगल प्ले से डाउनलोड किया जा सकता है।

किसान आवेदन कैसे करें

अगर किसी किसान को कृषि यंत्रों पर छूट के लिए आवेदन करना है, तो वह सीएससी (कॉमन सर्विस सेंटर) पर जाकर आवेदन कर सकता है। यहां किसान अपनी पसंद का यंत्र सीएससी संचालक को बता सकता है, जिसके बाद सीएससी सेंटर संचालक एक आवेदन नंबर किसान को देगा। इसके साथ ही किसान साइबर कैफे आदि से भी आवेदन कर सकते हैं, जिसके लिए किसान को एग्री मशीनरी.इन पोर्टल पर आवेदन करना होगा। इस एप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। डाउनलोड के बाद आपको भाषा चुननी होगी फिर अगले स्टेप में सेवा प्रदाता और किसान या उपयोगकर्ता का विवरण दिख जाएगा. बता दे कि इसे लेकर कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने यह उम्मीद जताई है कि इससे आम किसानों, कम जोत वाले सीमांत किसानों को अधिक लाभ होगा, क्योंकि वे ज्यादा महंगे उपकरण खरीद नहीं सकते। इन उपकरणों के उपयोग से किसानों की लागत कम होगी, उपज बढ़ेगी और उनकी आमदनी में भी इजाफा होगा।

समय के साथ लुप्त हो रही सांझी की परंपरा

– जयदेव राठी भराण

हरियाणा जिस प्रकार से शूरवीरों ओर किसानों की धरती है। उसी तरह यहां पर कला और संस्कृति का बेजोड़ नमूना है। यहां के लोगों का लोक कला के साथ गहरा रिश्ता है। यहां पर जिस प्रकार से मन्दिरों से लेकर चौपालों ओर पुराने घरों हवेलियों पर देवी देवताओं के भित्ति चित्र देखने को मिलेंगे। इसके साथ ही हरियाणवी लोक संस्कृति के चित्र भी देखने को मिलेंगे। मन्दिरों ओर चौपाल की दीवारों पर देवी देवताओं के भित्ति चित्र देखने को मिल जाएंगे।

हरियाणा के भित्ति चित्रों में सांझी का अहम स्थान है। सांझी हरियाणवी लोक संस्कृति की अनूठी परंपरा है। सांझी हरियाणवी महिलाओं की आस्था की प्रतीक है। यह परम्परा हिन्दी भाषाई कई राज्यों में है। हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के दक्षिण उत्तर पश्चिम अंचलों और राजस्थान, मध्य प्रदेश आदि अनेक में अलग अलग नामों से सांझी की पूजा की जाती है। सांझी भी उन्हीं देवी देवताओं का अनूठा रूप है। जिसकी नव रात्रों में पूजा की जाती है। अश्विन मास शुक्लपक्ष प्रथमा से लेकर शुक्ल पक्ष दशमी तक संध्या के समय कन्याएं गीत गाकर पूजा करती हैं और दसवीं के दिन गीत गाती हुई सांझी को तालाब में विसर्जित कर दी जाती है। हरियाणा में सांझी का महत्व सामाजिक धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो यह बहुत ही प्रचलित है। ग्रामीण अंचल में सांझी माता को लेकर अनेक तरह की कथाएं व परंपराएं प्रचलित हैं। सांझी नवरात्रे लगते ही दीवारों पर दिखाई देने लग जाती है। सांझी मिट्टी से बनाई जाती है। जो गीली और चिकनी होती है। सांझी को बनाने के लिए रंग बिरंगे सितारे बनाए जाते हैं। इनको रंगने के लिए गेरू ओर सफदी का प्रयोग किया जाता है। जो सांझी के वस्त्रों की जगह लगाए जाते हैं। कांच के टुकड़ों से उसकी शोभा बढ़ाई जाती है। मिट्टी से आभूषण बनाए जाते हैं। आभूषणों में नथ, कान के कुंडल, गले का हार, छलक्ड़े, कड़ी, हंसली, रमझोल, बोरला आदि आभूषण बनाए जाते हैं। सांझी का निर्माण होते ही उसमें देवी की छवि उभरती है।

इसके साथ ही दासी भंभो ओर काना घोड़ा भी दीवार पर बना दिए जाते हैं। शुक्ल पक्ष नवमी को सांझी का लानिहार उसको लेने के लिए आ जाता है। वह भी दीवार पर बनाया जाता है। सांझी को बनाने के बाद उसके मुह को कपडे से ढक दिया जाता है। क्योंकि हरियाणा में ओल्हा (पर्दा) प्रथा है। वह अपने पति के घर आई हुई है। सांझी को देखने पर लोक कला की इस मूर्त को देख कर सभी मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। लड़कियों में होड़ लगी रहती है कि सबसे ज्यादा खूबसूरत सांझी किसकी होगी। कन्याओं की प्रति अगाध श्रद्धा होती है। जो गीतों के माध्यम से छलकती है। न्योरे–न्योरे न्यारते सांझी माई के। सोलह कैनागत पितरों के।। अंत में सांझी की विदाई की जाती है। शुक्ल पक्ष दसवीं को उसे दीवार से उतार लिया जाता है। ओर उसे एक हंडिया मे रख लिया जाता है। कन्याएं गांव के तालाब में सांझी को विसर्जित कर देती हैं। मान्यता है कि सांझी तालाब के उस पार नहीं जानी चाहिए। मान्यता है कि अगर सांझी उस पार चली गई तो कुछ अनहोनी हो जाएगी। जब कन्याएं सांझी को विसर्जित करने जाती हैं तो गांव के लड़के रास्ते में ही सांझी की हंडिया को लाठी से तोड़ देते हैं। आज विडंबना यह है कि सांझी की परम्परा धीरे धीरे विलुप्त होती जा रही है।

हृदय की कोई भाषा नहीं होती। हृदय से बातचीत करता है। – महात्मा गांधी

हमें अपनी संस्कृति और परम्पराओं को बचाना है तो गांव–गांव जाकर संस्कृति ओर अपनी परम्पराओं का संदेश पहुंचाना चाहिए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। तभी हमारी संस्कृति ओर परम्परा जीवित रह सकती है। नहीं तो संस्कृति ओर परम्पराएं कागजों तक सिमट कर रह जाएंगी।

जीरो बजट खेती : हकीकत या शिगूफा ?

– प्रेमाराम सियाग

केंद्रीय वित्तमंत्री ने जैसे ही बजट में जीरो बजट खेती का जिक्र किया वैसे ही हर कोई कृषि वैज्ञानिक बनकर राय देने लग गया। एकाएक समर्थकों व आलोचकों के बीच संग्राम सा मच गया है। मुझे भी लगा कि इस बारे में जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए तो मैंने भी भारत मे जीरो बजट खेती पर सरसरी नजर मारी है। जीरो बजट खेती जैसी कोई खेती आज दुनियाँ में कहीं होती नहीं है। शायद दयानंद सरस्वती के नारे वेदों की और लौटो से प्रभावित होकर कुछ लोग जोश में वैदिक खेती का जिक्र कर गए हो मगर असल मे जीरो बजट खेती आदिम युग की खेती है। उस समय बीज बोया नहीं जाता था बल्कि खरपतवार की तरह अपने आप उग जाता था और लोग उसका उपयोग खाद्य पदार्थों के रूप में कर लेते थे। यह युग मांसाहारी के बाद का युग था।

भारत मे जीरो बजट खेती को लेकर कर्नाटक में कृषि ऋषि सुभाष पालेकर दावा कर रहे है कि उनकी तकनीक से एक लाख किसान खेती कर रहे है और उनकी आय बहुत ज्यादा बढ़ गई है। बड़े–बड़े सेमिनार कर रहे है और दावा कर रहे है कि मात्र एक गाय से 30 एकड़ में जीरो बजट वाली खेती हो सकती है। उन्होंने जीरो बजट खेती को लेकर कई किताबें लिखी है और भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी किया है। कृषि ऋषि पालेकर इसको आध्यत्मिक खेती भी कहते है। मैंने भी यूट्यूब व गूगल सर्च पर देखा है, जब एक–दो सेमिनार के वीडियो सुने तो जीरो बजट वाला अतिशयोक्तिपूर्ण प्रवचन खुद ही ध्वस्त करते नजर आए।

जोधपुर के कृषि वैज्ञानिक अरुण के.शर्मा को भी पढ़ा। वो इसी जीरो बजट खेती को जैविक खेती बताकर प्रचार–प्रसार करते नजर आएं। एक गाय व एक नीम के पेड़ को एक बीघा खेती के लिए पर्याप्त बता रहे है मतलब बीस बीघा खेती करनी है तो 20 गाय व 20 नीम के पेड़ होने चाहिए। निम्बोलियों को एकत्रित करना होगा और घाणी लगाकर तेल व खल को अलग करना होगा। तेल छिड़काव के रूप में व खल खाद के रूप में उपयोग कर सकते है।

इनसे पहले स्वदेशी जागरण मंच वाले इसी प्रकार की खेती के बारे में बहुत रिसर्च करने का दावा करते थे मगर इस तरह की खेती को मुनाफे वाली बनाकर कोई मॉडल खड़ा नहीं कर पाए। वर्मीकम्पोस्ट, जीवामश्त सहित गाय के गोबर व मूत्र द्वारा खाद बनाने की अनेकों विधियां बताई गई है। असल बात यह है कि गाय का पालन जीरो बजट में संभव नहीं है। हमारी सरकारें असल मे रिसर्च व प्रासंगिकता पर कम व बाबाओं पर ज्यादा भरोसा करती है।इंदिरा गांधी के जमाने मे महर्षि महेश योगी जमावड़ा लेकर दिल्ली में बैठ गए और इंदिरा गांधी को भावातीत ध्यान व टी एम यज्ञ से चीन व पाकिस्तान सहित तमाम दुनियाँ के दुश्मनों का हृदय परिवर्तन करने का नुस्खा सीखाने लग गए थे। पिछली कांग्रेस सरकार ने उन्नाव के बाबा शोभन सरकार के कहने पर टनों हीरे–सोने के खजाने को निकालने के लिए पूरी एएसआई की टीम जेसीबी व बुलडोजर के साथ भेज दी थी।

जब भी भारत की सरकारें ऐसे मूर्खतापूर्ण व मूढ़ताओं से भरे निर्णय लेती है तो मेरा माथा ठिठक जाता है कि किसी बाबा ने जरूर सलाह दी होगी जैसे बाबा रामदेव ने आयकर को खत्म करने व कालाधन लाकर देश की कायापलट का नुस्खा दिया था। जब शाम को ध्यान से मैंने वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण का भाषण सुना तो एकबार तो हंसी आई क्योंकि यह जेएनयू पास मंत्री है जहां के छात्र कभी गैर तार्किक बात बोलते नहीं है मगर दूसरे पल ही शपथग्रहण के धार्मिक नारों को याद करके माथा पीट लिया कि कीर्तन सभा मे बाबा सलाहकार नहीं होंगे तो कौन होंगे।

इनकी जीरो बजट खेती का खर्चा बस इतना सा है कि एक एकड़ जमीन के लिए जैविक खाद जीवामश्त बनाने के लिए 200 लीटर पानी में 10 किलो देसी गाय का गोबर, 10 लीटर गोमूत्र, एक से डेढ़ किलो गुड़, एक से डेढ़ किलो बेसन, थोड़ी खेत की मिट्टी मिलाकर इसका एक घोल बनाया जाता है। घोल को एक टंकी में रखकर दो–तीन मिनट तक हिलाएं और इसके बाद इसे बोरी से ढक कर 72 घटे के लिए छांव में रख दें। सुबह शाम घोल को दो–दो मिनट के लिए हिलाते रहें। इस घोल को सप्ताह के अंदर प्रयोग कर लेना होगा।

बड़ी सुंडियों व इल्लियों के खात्मे के लिए भी बताया जाता है कि जीरो बजट खेती में ब्रह्मास्त्र तैयार किया है। इसके लिए देसी गाय का मूत्र 10 लीटर, नीम के पत्ते पांच किलोग्राम, आम, अमरूद, नीम व पपीते के पत्तों की चटनी दो–दो किलोग्राम। वनस्पतियों के पत्तों की चटनी को गोमूत्र डालकर धीमी आंच पर उबाल आने तक गर्म करें। 48 घटे

जिसने कभी मन नहीं जीता, वह ईश्वर की सृष्टि का रहस्य नहीं समझ सकता। –विनोबा भावे

के लिए ठंडा होने के लिए रख दें। ढाई से तीन लीटर घोल को 100 लीटर पानी में मिला लें और एक एकड़ फसल पर इसका उपयोग करें।

आप नीम, आम, अमरूद, पपीते के पतों का जुगाड़ शुरू करिये और चटनी बना लीजिए। आवारा गायों को अभी से पकड़ना शुरू कर दीजिए नहीं तो आने वाले दिनों में गाय को लेकर महाभारत शुरू होगा ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार 5–10 बीघा जमीन के लिए कौरव–पांडव लड़ पड़े। मतलब कुरुक्षेत्र से शुरू और कुरुक्षेत्र में ही खत्म। पते की बात यही है कि चोर को कोई बड़ा डाका डालना हो तब वह बस्ती वालों के मनोरंजन खातिर कुछ शगूफा छोड़ देता है। भूमि अधिग्रहण बिल व 75 हजार कृषि उद्यमियोंध्दलालों की नियुक्ति पर नजर बनाए रखिये। सिंचाई, बिजली, ट्रेक्टर, बीज आदि के बिना कोई खेती संभव नहीं है इसलिए इस जीरो बजट वाली मूर्खता में उलझकर मत बैठ जाना नहीं तो जमीनें ही खो बैठोगे।

सुरजन : सफर 1947 शेखुपुरा से करनालसमीक्षाः कर्मपाल पूनिया

सुरजन : सफर 1947 शेखुपुरा से करनाल" भारत पाक बंटवारे पर लिखी गई बेहतरीन किताबों में से एक है। इस विषय पर पूर्व में लिखी सभी किताबों में बंटवारे का दर्द तो बयां किया गया है लेकिन बंटवारे के बाद जो लोग माइग्रेट होकर यहां आए उन लोगों को किन–किन विपत्तियों का सामना करना पड़ा वो किन परिस्थितियों में गुजरे इस बारे में विवरण न के बराबर मिलता है । लेकिन लेखक ने इस कमी को पूरा कर दिया है। लेखक पलविंदर खैरा मूलतः एक किसान हैं लेकिन जिस तरह उन्होंने बचपन में बड़े– बूढ़ों से सुनी आपबीती कहानियों को शब्दों में पिरोया है कोई भावुक हृदय कवि ही कर सकता है। और जिस तरह के कमेन्ट किताब पढ़ने वालों ने किए हैं तो इससे लगता है कि लेखक अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल रहे हैं ।
दुष्यंत दलाल लिखते हैं।

"किताब पढ़कर यूं लग रहा उस काफिले के साथ ही चल रहा हूँ, सुरजन के परिवार के साथ "

दुष्यंत दलाल आगे लिखते हैं –" सुरजन नाम के पात्र से मैं अभी भी जुड़ाव महसूस कर रहा हूँ ३कृभाई बहन का सुरजन और सुखवन्त का मिलने वाला पार्ट दिल को छू लेने वाला था "

एक अन्य पाठक "सुखवीर गठवाला" लिखते हैं– "एक बार पढ़ने बैठा तो ऐसा जुड़ा की पूरी पढ़कर ही दम लिया। कभी खुद को बनते काफिलों के पास पाया तो कभी, कभी मारकाट के बीच, कभी बरसाती रात में बैलगाड़ियों के बीच, कभी बल्लों की हेड पर। जान बचाने की कीमत पर सब दर्द छोटे हो जाते हैं ये खैरा साहब ने बड़े अच्छे तरीके से दिखाया है।"

जिस तरह से पाठकों की प्रशंशापूर्ण प्रतिक्रियाएं आ रही हैं लगता है लेखक ने उपन्यास के किरदार में पूरी तरह डूब कर लिखा है । वैसे भी दर्द को वही महसूस कर सकता है जिसके पूर्वजों ने या फिर खुद ने उस दर्द को जिया हो । अंत में मैं बस इतना ही कहना चाहूंगा कि किताब बेहतरीन बन पड़ी है और बंटवारे के और उसके बाद का जो दर्द माइग्रेट होकर आए और गए हमारे दोनों तरफ के भाइयों ने सहा है उसको नजदीक से महसूस करने के लिए आपको किताब को पढ़ना चाहिए ताकि फिर कोई 1947 न हो और कहीं किसी सुरजन को अपने पुरखों के पुशतैनी घर और जमीन से अलग न होना पड़े, मृत्युसम इतने भयानक कष्ट न सहने पड़ें।

फर्श से अर्श तक का सफर तय करने वाले भारतीय स्वाधीनता के एक निर्भीक सिपाही लाला बहादुर शास्त्री

– यशपाल कादियान

"हम चाहे रहें या न रहें, हमारा देश और तिरंगा झंड़ा रहना चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा तिरंगा रहेगा। भारत विश्व के देशों में सर्वोच्च होगा। यह उन सबमें अपनी गौरवशाली विरासत का संदेश पहुंचाएगा।" ये शब्द भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के हैं, जो उन्होंने लाल किले की प्राचीर से 15 अगस्त 1965 को कहे थे।

छोटी कद–काठी में विशाल हृदय रखने वाले श्री शास्त्री जी के पास जहां अनसुलझी समस्याओं को सुलझाने की विलक्षण क्षमता थी, वहीं अपनी खामियों को स्वीकारने का अदम्य साहस भी विद्यमान था। हृदय में छिपी देशप्रेम की चिगांरी से शास्त्री जी को स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजों के खिलाफ जूझ मरने की शक्ति प्राप्त हुई। सन् 1965 में जब पड़ोसी देश पाकिस्तान ने हमारी सीमाओं पर अतिक्रमण करने की भूल की तो उनका सरल स्वभाव उग्र होकर दहक उठा। उनकी ललकार का मनोबल पाकर भारतीय सैनिकों ने पा सेना को अपने इरादे बदलने के लिए विवश कर दिया।

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

शास्त्री जी के नारे 'जय जवान–जयकिसान' ने किसानों और सैनिकों के माध्यम से देश में चमत्कार भरा उत्साह फूंक दिया।

शास्त्री जी प्रतिनिधि थे एक ऐसे आम आदमी के, जो अपनी हिम्मत से विपरीत परिस्थितियों की दिशाएं मोड़ देता है। आज देश को ऐसे सशक्त नेतृत्व की जरूरत है। शास्त्री जी के भाषणों के महत्वपूर्ण अंश

"हमारा प्रयास होगा कि हम विश्व के देशों से मित्रता का संबंध कायम रखें। हमारी नीति अन्तर्राष्ट्रीय गुटबंदियों से अलग है। हम अपनी नीति के अन्तर्गत अपने पड़ोसी देशों से भी अच्छे सम्बंध बनाने का प्रयास करेंगे। हमारा यह कीर्तिमान रहा है कि हमने अधिकांश पड़ोसियों से मित्रता और सहयोग का सम्बंध बनाकर रखा है। हर किसी के साथ अपनी–अपनी समस्याएं हैं। हम उन समस्याओं को मिल बांटकर शांतिपूर्व सुलझााने का प्रयास करेंगे।"

"भारत देश में किसी भी व्यक्ति को त्याग या बलिदान से पीछे नहीं हटना चाहिए क्योंकि यह गांधी जी का देश है लेकिन समय के साथ–साथ लोगों को अपने अंदर बदलाव लाना जरूरी है। यदि हमारे घर में गेंहू नहीं है तो चावल खा कर गुजारा करना चाहिए। हमें किसी के भरोसे नहीं रहना चाहिए। हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए कि हम आत्मनिर्भर हैं। इसी में हम सबका भला है।"

"हमारे देश के सामने तरह–तरह की समस्याएं हैं। जो बेहद जटिल हैं, वह है भारत पाक की समस्या। अभी हमारा युद्ध हुआ। हमारे माथे विजयी तिलक लगा। हमने दुनियां को दिखा दिया कि भारत के सभी लोग एक हैं। वे सिर्फ भारतीय है और हम सभी मिलकर एक उद्देश्य के लिए कार्य करते हैं। रणभूमि में सभी संप्रदाय के वीरों ने अपना खून बहाया है ताकि भारत के सम्मान पर कोई आंच न आए। हम उन वीरों के प्रति गर्व महसूस करते हैं।"

"हम चाहे रहें या न रहें। हमारा देश और तिरंगा झंडा रहना चाहिए। मुझे विश्वास है कि हमारा तिरंगा झंड़ा रहेगा। भारत दुनिया के देशों में एक बड़ा देश होगा। शायद हमारा देश दुनियां को कुछ दे सके।"

"हम अपने देश की हिफाजत चाहते हैं। हम अपने देश की रक्षा के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा सकते हैं। हमारे इरादे अटूट हैं। जिसके इरादे अटूट होते हैं, उस पर कभी संकट नहीं आता। हम देशवासी एक हैं। इसलिए कोई हमारे देश का बाल बांका नहीं कर सकता।"

"समय बड़ा नाजुक आ गया है। अभी खतरा भी नहीं टला है। इस स्थिति में भारत के किसानों को तैयार रहना है। जवान अपना खून बहाएंगे तो उन्हें अपना पसीना बहाकर अन्न का उत्पादन करना है। जिससे कि संकट के समय कोई भूखा न मरे। हमारे किसान हमारे देश की जान हैं। उन्हें जी–जान से खेती में जुट जाना है और अनाज की पैदावार को बढ़ाना है। हम दूसरे देशों पर निर्भर नहीं रहना चाहते। हमें अपनी आजादी को संजोकर रखना है। हमें चाहे मुसीबत ही उठानी पड़े पर देश की रक्षा हमें सर्वप्रथम करनी है। हमें अपने देश को शक्तिशाली बनाना है।"

आज देश में भ्रष्टाचार जोरो पर है। मंहगाई से जनता त्राहि–त्राहि कर रही है। देश का नेतृत्व कमजोर दिख रहा है, तो लाल बहादुर जैसे प्रधानमंत्री की जरूरत हैं।

गांधी जी के सत्याग्रह की सार्थकता व उनके सपनों का भारत

–विजय पाल कम्बोज, करनाल

हमने इतिहास की पुस्तकों में पढ़ा, कि गांधी जी ने सत्याग्रह किया, भूख हड़ताल की, जेलों के अंदर गए और देश आजाद हो गया। अभी तक 1935 के बाद जन्म लेने वालों को इस बात का अहसास नहीं था कि सत्याग्रह, अंहिसा के आंदोलन में इतनी ताकत होती हैं। 5 अप्रैल 2011 से 8 अप्रैल 2011 तथा 16 अगस्त 2011 से 28 अगस्त 2011 तक चले शांतिपूर्वक जन आंदोलन से देश के युवकों और हमारे जैसे 65 वर्ष के जवानों को यह पहली बार अभ्यास हुआ कि अंहिसक जन आंदोलन में इतनी भारी ताकत होती हैं। हमारी केन्द्रीय सरकार ने कोई तानाशाह से कम भूमिका नहीं निभाई। 4 जून की काली और कलंकित रात को कोई नहीं भूल सकता जब सरकार ने आधी रात के समय सोते हुए, निहत्थे पुरूषों, स्त्रियों को बेहरमी से पीट–पीट रामलीला मैदान से बाहर भगा दिया। बाबा रामदेव जी शायद इतने परिपक्व व अनुभवी नहीं थे। लेकिन अन्ना जी ने जिस तरह सूझ बूझ अनुभव का परिचय देकर सरकार की हर चाल को विफल कर दिया और आंदोलन को शांतिमय व गरिमापूर्ण तरीके से सफलता की मंजिल तक पहुंचाया, उससे गांधी जी के आंदोलनों की सार्थकता का सारा देश परिचित हो गया। जो नेता, संसद, अपने को जनता से बड़े समझते थे, उनकी भी समझ में आ गया कि जनता ही सबसे बड़ी होती है। गांधी जी ने अपने शांतिपूर्वक सत्याग्रह के बल पर अंग्रेजों को 200 वर्षों के साम्राज्य को यहां से भागने पर मजबूर कर दिया। इसमें शक नहीं कि क्रांतिकारियों का भी बहुत बड़ा योगदान था, लेकिन बात अब समझ में आई कि केवल हिंसा के बल पर आजादी को प्राप्त करना बहुत कठिन था। यह गांधी जी

जिसके पास विद्या रूपी नेत्र नहीं है, वह अंधे के समान है। – अज्ञात

का अहिंसापूर्वक आंदोलन था जिससे इस देश की सारी जनता विदेशी हकूमत के विरूद्ध उठ खड़ी हुई जिससे क्रांतिकारियों की जीवन की कुर्बानियों और गांधी जी के अहिंसक आंदोलन दोनों ने मिलकर ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त कर दिया।

इसलिए किसी ने कहा है कि आने वाली पीढ़ियां कठिनाई से विश्वास करेगी कि कोई ऐसा महामानव भारत की धरती पर आया होगा।

गांधी जी का कहना था कि भारत से केवल अंग्रेजो को और उनके राज्य को हटाने से भारत को अपनी सच्ची सभ्यता का स्वरूप नहीं मिलेगा। हम अग्रेजों को हटा दे और उन्हीं की सभ्यता का और उन्हीं के आदर्श स्वीकार करें, तो हमारा उद्धार नहीं होगा। हमें अपनी आत्मा को बचाना चाहिए। भारत के पढ़े लिखे चंद लोग पश्चिम मोह में फंस गए हैं। जो लोग पश्चिम के असर में नहीं आए हैं, वे भारत की धर्मपरायण नैतिक सभ्यता को ही मानते हैं। गांधी जी ने आगे कहा कि पश्चिम की शिक्षा व पश्चिम का विज्ञान अंग्रेजों के अधिकार के जोर पर देश में आए। उनकी रेले, उनकी चिकित्सा उनके न्यायालय और उनकी न्यायपद्धति आदि सब बातें अच्छी संस्कृति के लिए घातक है। पश्चिम के देशों, यूरोप अमेरिका में जो आधुनिक सभ्यता काम कर रही है, वह कल्याणकारी नहीं है।

गांधी जी ने स्वतंत्र भारत की कल्पना इस प्रकार से की थी, "मैं एक ऐसे भारत के लिए काम करूंगा, जिमें गरीब से गरीब लोग यह महसूस करेंगे कि यह देश उनका है और देश के निर्माण में उनकी आवाज भी प्रभावशाली है। ऐसा भारत जिसमें ऊंची और नीची जाति के लोग पूरे मेल मिलाप से रह सकेंगे। ऐसे भारत में छुआछात के अभिषाप की गुंजाईश नहीं होगी। स्त्रियां भी पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त कर सकेंगी। यही है मेरे सपनों का भारत"।

आज हमारी सरकार कहने को तो हर बात में गांधी जी का नाम लेती है, लेकिन अमल कहीं भी नहीं करती। सरकार का यह हाल है कि बगल में छुरी, मंह में राम–राम। यदि यह बात नहीं होती और सरकार गांधी जी के बताए मार्ग पर चलती तो देश आज अनैतिकता, भ्रष्टाचार के गढ़े में नहीं गिरता। गांधी जी की आत्मा इन राजनेताओं को देखकर अवश्य ही विलाप कर रही होगी।

अब गांधी जी की आत्मा के रूप में अन्ना हजारे ने जन्म लिया है जो इन पापी भ्रष्टाचारियों को सुबुद्धि देकर गांधी जी के सपनों को साकार करेंगे।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

–कुलदीप दलदल, आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल

सरफरोशी की तमन्ना जब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजू–ए–कातिल में है।

भारत जब भी अपने आजाद होने पर गर्व महसूस करता है तो उसका सिर उन महापुरुषों के लिए हमेशा झुकता है जिन्होंने देश प्रेम की राह में अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया। देश के स्वतंत्रता संग्राम में हजारों ऐसे नौजवान भी थे जिन्होंने ताकत के बल पर आजादी दिलाने की ठानी और क्रांतिकारी कहलाए। भारत में जब भी क्रांतिकारियों का नाम लिया जाता है तो सबसे पहला नाम शहीद भगत सिंह का आना स्वाभाविक है।

शहीद भगत सिंह ने ही देश के नौजवानों में ऊर्जा का ऐसा गुब्बारा भरा कि विदेशी हुकूमत को इनसे डर लगने लगा। हाथ जोड़कर निवेदन करने की जगह लोहे से लोहा लेने की आग के साथ आजादी की लड़ाई में कूदने वाले भगत सिंह की दिलेरी की कहानियां आज भी हमारे अंदर देशभक्ति की आग जलाती है। माना जाता है कि अगर उस समय देश के बड़े नेताओं ने भी भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथियों का सहयोग किया होता तो देश वक्त से पहले आजाद हो जाता और तब शायद हम और अधिक गर्व महसूस करते, लेकिन देश के एक नौजवान क्रांतिकारी को अंग्रेजों ने फांसी की सजा दे दी, मरने के बाद भी भगत सिंह मरे नहीं। आज के नेताओं में जहां हम हमेशा छल और कपट की भवना देखते हैं, उनके लिए भगत सिंह आदर्श शाख्सियत होने चाहिए जिससे सीख ली जा सके।

जन्म व शिक्षा

भारत की आजदी के अमर शहीद भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को पंजाब के जिला लायलपुर के बंगा गांव (जो अब पाकिस्तान में है) में हुआ था। भगत सिंह के पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम सरदारनी विद्यावती कौर था। उनके पिता और उनके दो चाचा अजीत सिंह तथा स्वर्ण सिंह भी अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई का एक हिस्सा थे। जिस समय भगत सिंह का जन्म हुआ उस समय ही उनके पिता एवं चाचा को जेल से रिहा किया गया था। भगतसिंह की दारी ने बच्चे का

नाम भागां वाला (अच्छे भाग्य वाला) रखा। बाद में उन्हें भगत सिंह कहा जाने लगा। एक देशभक्त परिवार में जन्म लेने की वजह से ही भगत सिंह को देशभक्ति का पाठ विरासत के तौर पर मिला।

भगत सिंह जब चार–पांच वर्ष के हुए तो उन्हें गांव के प्राइमरी स्कूल में दाखिला दिलाया गया। भगत सिंह अपने दोस्तों के बीच बहुत लोकप्रिय थे उन्हें स्कूल की चारदीवारी में बैठना अच्छा नहीं लगता था बल्कि उनका मन तो हमेशा खुले मैदानों में ही लगता था।

रहबर–ए–राह–ए मुहब्बत, रह न जाना राह में,
लज्जत–ए–सहरानवर्दी दूरी–ए–मंजिल में है।

शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के पश्चात भगत सिंह को 1916–17 में लाहौर के डी.ए.वी. स्कूल में दाखिला दिलाया गया। वहां उनका संपर्क लाला लाजपतराय और अंबा प्रसाद जैसे देशभक्तों से हुआ। 1919 में रॉलेट एक्ट के विरोध में संपूर्ण भारत में प्रदर्शन हेा रहे थे और इसी वर्ष 13 अप्रैल को जलियांवाला बाग काण्ड हुआ। इसका भगत सिंह के बाल मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उसके मन में राष्ट्रीय आंदोलन में कूदने की भावना बलवती होने लगी।

गांधीजी का असहयोग आंदोलन

1920 के महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर 1921 में भगत सिंह ने स्कूल छोड़ दिया। असहयोग आंदोलन से प्रभावित छात्रों के लिए लाला लाजपतराय ने लाहौर में नेशनल कॉलेज की स्थापना की थी। इसी कॉलेज में भगत सिंह में भी देशभक्ति की भावना फलने–फूलने लगी। इसी कॉलेज में उनका संपर्क यशपाल, भगवती चरण, सुखदेव, तीर्थराम, झण्डासिंह आदि क्रांतिकारियों से हुआ। कॉलेज में एक नेशनल नाटक क्लब भी था। इसी क्लब के माध्यम से भगत सिंह ने देशभक्ति पूर्ण नाटकों में अभिनय भी किया।

1923 में जब बड़े भाई की मश्त्यु के बाद उन पर शादी करने का दबाव डाला गया तो वह घर से भाग गए। इसी दौरान उन्होंने दिल्ली में 'अर्जुन' समाचार पत्र के संपादकीय विभाग में अर्जुन सिंह के नाम से कुछ समय काम किया और अपने को नौजवान भारत सभा से भी संबद्ध रखा।

चन्द्रशेखर आजाद से संपर्क

वर्ष 1924 में उन्होंने कानपुर में दैनिक पत्र प्रताप के संचालक गणेश शंकर विद्यार्थी से भेंट की। इस भेंट के माध्यम से वे बटुकेश्वर दत्त और चन्द्रशेखर आजाद के संपर्क में आए। चंद्रशेखर आजाद के प्रभाव से भगत सिंह पूर्णतः क्रांतिकारी बन गए। चंद्रशेखर आजाद भगत सिंह को सबसे काबिल और अपना प्रिय मानते थे। दोनों ने मिलकर कई मौकों पर अंग्रेजों की नाक में दम किया।

भगत सिंह ने लाहौर में 1926 में 'नौजवान भारत सभा' का गठन किया। यह सभा धर्मनिरपेक्ष संस्था थी तथा इसके प्रत्येक सदस्य को सौगंध लेनी पड़ती थी कि वह देश के हितों को अपनी जाति तथा अपने धर्म के हितों से बढ़कर मानेगा। मई 1930 में इस संस्था को गैर–कानूनी घोषित कर दिया गया।

वर्ष 1919 से लागू शासन सुधार अधिनियमों की जांच के लिए फरवरी 1928 में साइमन कमीशन मुंबई पहुंचा। देशभर में साइमन कमीशन का विरोध हुआ। 30 अक्टूबर, 1928 को कमीशन लाहौर पहुंचा। लाला लाजपराय के नेतृत्व में एक जुलूस कमीशन के विरोध में शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहा था, जिसमें भीड़ बढ़ती जा रही थी। इतनी अधिक भीड़ और उनका विरोध देख कर सहायक अधीक्षक साण्डर्स ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज करवा दिया। इस लाठीचार्ज में लाला लाजपतराय बुरी तरह घायह हो गए जिसकी वजह से 17 नवंबर 1928 को उनका देहांत हो गया। चूंकि लाला लाजपतराय भगत सिंह के आदर्श पुरूषों में से एक थे, इसलिए उन्होंने उनकी मृत्यु का बदला लेने की ठान ली।

लाला लाजपतराय की हत्या का बदला लेने के लिए हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ने भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, आजाद और जयगोपाल को यह कार्य दिया। क्रांतिकारियों ने साण्डर्स को मारकर लालाजी की मौत का बदला लिया। साण्डर्स की हत्या ने भगत सिंह को पूरे देश में एक क्रांतिकारी की पहचान दिला दी।

लेकिन इससे अंग्रेजी सरकार बुरी तरह बौखला गई। हालात ऐसे हो गए कि सिख होने के बाद भी भगत सिंह को केश और दाढ़ी कटवानी पड़ी। लेकिन उन्होंने अलग वेश बनाकर अंग्रेजों की आंखों में धूल झोंककर भारत के जन–जन को गदगद कर दिया।

वक्त आने दे बता देंगे, तुझे ए आसमान।
हम अभी से क्या बताएं, क्या हमारे दिल में है।

उन्हीं दिनों अंग्रेंज सरकार दिल्ली की असेंबली में पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल लाने की तैयारी में थी। ये बहुत ही दमनकारी कानुन थे और सरकार इन्हें पास करने का फैसला कर चुकी थी। शासकों का इस बिल

जो अपना चित्र मुझमें लगा देते हैं, वे मेरी कृपा से संसार के सभी दुःखों से पार हो जाते हैं। –श्री कृष्ण

को कानून बनाने के पीछे उद्देश्य था कि जनता में क्रांति का जो बीज पनप रहा है उसे अंकुरित होने से पहले ही समाप्त कर दिया जाए।

चंद्रशेखर आजाद और उनके साथियों को यह हरगिज मंजूर नहीं था। इसलिए उन्होंने निर्णय लिया कि वे इसके विरोध में संसद में एक धमका करेंगे जिससे बहरी हो चुकी अंग्रेज सरकार को उनकी आवाज सुनाई दे। इस काम के लिए भगत सिंह के साथ बटुकेश्वर दत्त को कार्य सौंपा गया। 8अप्रैल 1929 के दिन जैसे ही बिल संबंधी घोषणा की गई तथा भगत सिंह ने असेम्बली में बम फेंका। भगतसिंह ने नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद! साम्राज्यवाद का नाश हो!इसी के साथ अनेक पर्चे भी फेंके, जिसमें अंग्रेजी साम्राजयवाद के प्रति आम जनता का रोष प्रकट किया गया था। इसके पश्चात् क्रांतिकारियों को गिरफ्तार करने का दौर चला। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास मिला।

भगत सिंह और उनके साथियों पर लाहौर षड्यंत्र का मुकदमा भी जेल में रहते ही चलाया गया। भागे हुए क्रांतिकारियों में मुख राजगुरु पूना से गिरतार करके लाए गए। अंत में अदालत ने वही फैसला दिया, जिसकी पहले से ही उम्मीद थी।

अदालत ने भगतसिंह को भारतीय दंड संहिता की धारा 129, 302 तथा विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4 तथा 6 एफ तथा भारतीय दण्ड संहिता की धारा 120 के अंतर्गत अपराधी सिद्ध करार दिया तथा 7 अक्तूबर, 1930 को 68 पृष्ठीय निर्णय दिया, जिसमें भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को मृत्युदण्ड की सजा मिली।

23 मार्च, 1931 की रात

23 मार्च, 1931 की मध्यरात्रि को अंग्रेजी हुकूमत ने भारत के तीन सपूतों भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी पर लटका दिया। अदालती आदेश के मुताबिक भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को 24 मार्च 1931 को फांसी लगाई जानी थी। लेकिन 23 मार्च 1931 को ही तीनों को देर शाम करीब सात बजे फांसी लगा दी गई और शव रिश्तेदारों को न देकर रातों रात ले जाकर व्यास नदी के किनारे जला दिए गए। अंग्रेजों ने भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारियों की बढ़ती लोकप्रियता और 24 मार्च को होने वाले संभावित विद्रोह की वजह से 23 मार्च को ही भगत सिंह और अन्य को फांसी दे दी। अंग्रेजों ने भगतसिंह को तो खत्म कर दिया पर वह भगत सिंह के विचारों को खत्म नहीं कर पाए जिसने देश की आजादी की नींव रख दी। आज भी देश में भगत सिंह क्रांति की पहचान हैं।

आज फिर मकतल में थे कातिल कह रहा है बार–बार, क्या तमन्ना–ए–शहादत भी किसी के दिल में है। ए–शहीद–ए मुलको मिल्लत में तेरे ज़ज्बो के निसार, अब तेरी कुर्बानी की चर्चा गैर की महफिल में है। अब ना पहले पलवल हैं और ना अरमानों की भीड़, एक मिट जाने की हसरत अब दिल–ए 'बिस्मिल' में है।

साभर – 'अतुल्य जाट कौम' पुस्तक

चमत्कारिक प्रतिभा के धनी प्रथम राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम

– यशपाल कादियान, पत्रकार, करनाल, ध्वनि तरंग

चमत्कारिक प्रतिभा के धनी डॉ. अवुल पकिर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम भारत के ऐसे पहले वैज्ञानिक हैं, जो देश के राष्ट्रपति (11वें राष्ट्रपति के रूप में) के पद पर भी आसीन हुए। वे देश के ऐसे तीसरे राष्ट्रपति (अन्य दो राष्ट्रपति हैं सर्वपल्लीन राधाकृष्णन और डॉ. जाकिर हुसैन) भी है, जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पूर्व देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही साथ वे देश के इकलौते राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने आजन्म अविवाहित रहकर देश सेवा का व्रत लिया है।

कलाम का जन्म : अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम कस्बे के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। उनके पिताजी जैनुल आब्दीन नाविक थे। वे पांच वख्त के नमाजी थे और दूसरों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते थे। कलाम की माता का नाम आशियम्मा था। वे एक धर्मपरायण और दयालु महिला थी। सात भाई–बहनों वाले परिवार में कलाम सबसे छोटे थे, इसलिए उन्हें अपने माता–पिता का विशेष दुलार मिला।

पांच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के प्राथमिक स्कूल में कलाम की शिक्षा का प्रारंभ हुआ। उनकी प्रतिभा को देखकर उनके शिक्षक बहुत प्रभावित हुए और उनपर विशेष स्नेह रखने लगे। एक बार बुखार आ जाने के कारण कलाम स्कूल नहीं जा सके। यह देखकर उनके शिक्षक मुत्थुश जी काफी चिंतित हो गये और वे स्कूल समाप्त होने के बाद उनके घर जा पहुंचे। उन्होंने कलाम के स्कूल न जाने का

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

कारण पूछा और कहा कि यदि उन्हें किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, तो वे निःसंकोच कह सकते हैं।

कलाम के बचपन के दिन : कलाम का बचपन बड़ा संघर्ष पूर्ण रहा। वे प्रतिदिन सुबह चार बजे उठकर गणित का ट्यूशन पड़ने जाया करते थे। वहां से 5 बजे उठने के बाद वे अपने पिता के साथ नमाज पढ़ते, फिर घर से तीन किलोमीटर दूर स्थित धनुषकोड़ी रेलवे स्टेशन से अखबार लाते और पैदल घूम–घूमकर बेचते। 8 बजे तक वे अखबार बेच कर घर लौट आते। उसके बाद तैयार होकर वे स्कूल चले जाते। स्कूल के लौटने के बाद शाम को वे अखबार के पैसों की वसूली के लिए निकल जाते।

कलाम की लगन और मेहनत के कारण उनकी मां खाने–पीने के मामले में उनका विशेष ध्यान रखती थीं। दक्षिण में चावल की पैदावार अधिक होने के कारण वहां रोटियां कम खाई जाती हैं। लेकिन इसके बावजूद कलाम की रोटियों से विशेष लगाव था। इसलिए उनकी मां उन्हें प्रतिदिन खाने में दो रोटियां अवश्य दिया करती थीं। यह देखकर मां ने अपने हिस्से की रोटी कलाम को दे दी। उनके बड़े भाई ने कलाम को धीरे से यह बात बता दीं। इससे कलाम अभिभूत हो उठे और दौड़ कर मां से लिपट गये।

प्राइमरी स्कूल के बाद कलाम ने श्वार्ट्ज हाईस्कूल, रामनाथपुरम में प्रवेश लिया। वहां की शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने 1950 में सैंट जोसेफ कॉलेज, त्रिची में प्रवेश लिया। वहां से उन्होंने भौतिकी और गणित विषयों के साथ बी.एस.सी. की डिग्री प्राप्त की। अपने अध्यापकों की सलाह पर उन्होंने स्नातकोतर शिक्षा के लिए मद्रास इंस्टीयट्यूट ऑफ टेक्लालॉजी (एम.आई.टी.), चेन्नई का रुख किया। वहां पर उन्होंने अपने सपनों को आकार देने के लिए एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का चयन किया।

कलाम के जीवन का स्वर्णिम सफर : कलाम की हार्दिक इच्छा थी कि वायु सेना में भर्ती हो तथा देश की सेवा करें। किंतु इस इच्छा के पूरी न हो पाने पर उन्होंने बे मन से रक्षा मंत्रालय के तकनीकी विकास एवं उत्पाद DTD & P (Air) का चुनाव किया। वहां पर उन्होंने 1958 में तकनीकी केंद्र (सिविल विमानन) में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक का कार्यभार संभाला। उन्होंने अपने प्रतिभा के बल पर वहां पहले ही साल में एक पराध्वनिक लक्ष्यभेदी विमान की डिजाइन तैयार करके अपने स्वर्णिम सफर की शुरुआत की।

डॉ. कलाम के जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब वे 1962 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (Indian Space Research Organisation-ISRO) से जुड़े। यहां पर उन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य किया। उन्होंने अपने निर्देश में उन्नत संयोजित पदार्थों का विकास आरंभ किया। उन्होंने त्रिवेंद्रम में स्पेस साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी सेंटर (एम.एस.टी. सी.) में 'फाइबर रिइनफोर्स्ड प्लास्टिक' डिवीजन (Fibre Reinforced Plastics- FRP) की स्थापना की। इसके साथ ही साथ उन्होंने यहां पर आम आदमी से लेकर सेना की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाओं की शुरुआत की।

उन्हीं दिनों इसरो में स्वदेशी क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से 'उपग्रह प्रवेक्षण यान कार्यक्रम' (Satellite Launching Vehicle-3) की शुरुआत हुई। कलाम की योग्यताओं को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें इस योजना का प्रोजैक्ट डायरेक्टर नियुक्त किया गया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य था। उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने के लिए एक भरोसेमंद प्रणाली का विकास एवं संचालन। कलाम ने अपनी अद्भूत प्रतिभा के बल पर इस योजना को भलीभांति अंजाम तक पहुंचाया तथा जुलाई 1980 में 'रोहिणी' उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित करके भारत को 'अंतराष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब' के सदस्य के रूप में स्थापित कर दिया।

डॉ. कलाम ने भारत को रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से रक्षामंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. वी.एस. अरुणावलम के मार्गदर्शन में 'इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम' (Integrated Guided Misslie Development Programme-IGMDP) की शुरुआत की। इस योजना के अंतर्गत 'त्रिशूल' (नीची उडान भरने वाले हैलिकॉटपरों, विमानों तथा विमानभेदी मिसाइलों को निशाना बनाने में सक्षम), 'पृथ्वी' (जमीन से जमीन पर मार करने वाली, 150 कि.मी. तक अचूक निशाना लगाने वाली हल्की मिसाइल), 'आकाश' (15 सेकंड में 25 मिती तक जमींन से हवा में मार करने वाली यह सुपरसोनिक मिसाइल एक साथ चार लक्ष्यों पर वार करने में सक्षम), 'नाग' (हवा से जमीन पर अचूक मार करने वाली टैंक भेदी एवं 'ब्रहमोस' (रूस से साथ संयुक्त रूप से विकसित मिसाइल, ध्वनि से भी तेज चलने तथा धरती, आसमान और समुद्र में मार करने में सक्षम) मिसाइलें विकसित हुई।

इन मिसाइलों के सफल प्रेक्षण ने भारत को उन देशों की कतार मे ला खड़ा किया, जो उन्नत प्रौद्योगिकी व शस्त्र प्रणाली से सम्पन्न हैं। रक्षा क्षेत्र में विकास की यह

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। –मनु

गति इसी प्रकार बनी रहे, इसके लिए डॉ. कलाम ने डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस रिसर्च एण्डर विस्तार करते हुए आर. सी.आई. नामक एक उन्नत अनुसंधान केंद्र की स्थापना भी की।

डॉ. कलाम ने जुलाई 1992 से दिसंबर 1999 तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा डी.आर.डी.ओ. के सचिव रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। उन्होंने भारत को 'सुपर पॉवर' बनाने के लिए 11 मई और 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण किया। इस प्रकार भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण सफलता अर्जित की।

डॉ. कलाम नंबर, 1999 में भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार रहे। इस दौरान कैबिनेट मंत्री का दर्जा प्रदान किया गया। उन्होंने भारत के विकास स्तर को विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की तथा अनेक वैज्ञानिक सलाहकार का पद छोड़ने के बाद उन्होंने अन्ना विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कीं। उन्होंने अपनी सोच को अमल में लाने के लिए इस देश के बच्चों और युवाओं को जागरूक करने का बीड़ा लिया। इस हेतू उन्होंने निश्चय किया कि वे एक लाख विद्यार्थियों से मिलेंगे और उन्हें देश सेवा के लिए प्रेरित करने का कार्य करेंगे।

डॉ. कलाम 25 जुलाई 2002 को भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित हुए। वे 25 जुलाई 2007 तक इस पद पर रहे। वह अपने देश भारत को एक विकसित एवं महाशक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। उनके पास देश को इस स्थान तक ले जाने के लिए एक स्पष्ट और प्रभावी कार्य योजना थी। उनकी पुस्तक 'इण्डिया 2020' में उनका देश के विकास का समग्र दशष्टिकोण देखा जा सकता है। वे अपनी इस संकल्पना को उद्घाटित करते हुए कहते थे कि इसके लिए भारत को कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण, ऊर्जा, शिक्षा व स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, परमाणु, अंतरिक्ष और रक्षा प्रौद्योगिकी के विकास पर ध्यान देना होगा।

कलाम की पुस्तकें : डॉ. अब्दुल कलाम भारतीय इतिहास के ऐसे पुरुष हैं, जिनसे लाखों लोग प्रेरणा ग्रहण करते है। अरुण तिवारी लिखित उनकी जीवनी 'विंग्स ऑफ फायर' (Wings of fire) भारतीय युवाओं और बच्चों के बीच बेहद लोकप्रिय है। उनकी लिखी पुस्तकों में 'गाइडिंग सोल्सः डायलॉग्स ऑन द पर्पज ऑफ लाइफ' (Guiding Souls Dialogurs on the Purpose of life) एक गंभीर कृति है, जिसके सहलेखक अरुण के. तिवारी हैं। इसमें उन्होंने अपने आत्मिक विचारों को प्रकट किया है।

इनके अतिरिक्त उनकी अन्य चर्चित पुस्तकें हैं– 'इग्नाइटेड माइंडसः अनलीशिंग दा पॉवर विदीन इंडिया' (Ignited Minds: Unleashing The Power Within India), एनविजनिंग अन एमपावर्ड नेशनः टेक्नोलॉजी फॉर सोसायटल ट्रॉसफारमेशन' (Envisioning an Empowered Nation: Technology for Societal Transformation), 'डेवलपमेंट्सइन फल्यूड मैकेनिक्सि एण्ड स्पेस टेक्नालॉजी' (Developments in Fluid Mechanics and Space Technology), सह लेखक– आर. नरसिम्हा, '2020ः ए विजन फॉर दा न्यू मिलेनियम' (2020: A Vision for the New Millennium) सह लेखक– वाई.एस. राजन, 'इनविजनिंग ऐन इम्पांएवढद्य नेशनः टेक्नोमलॅजी फॉर सोसाइटल ट्रॉसफॉरमेशन' (Envisioning an Empowered Nationl: Technology for Societal Transformation) सह लेखक– ए. सिवाथनु पिल्ललई।

डॉ. कलाम ने तमिल भाषा में कविताएं भी लिखी हैं, जो अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। उनकी कविताओं का एक संग्रह 'दा लाइफ ट्री' (The Life Tree) के नाम से अंग्रेजी में भी प्रकाशित हुआ है।

कलाम को मिलने वाले पुरस्कार/सम्मान : डॉ. कलाम की विद्वता एवं योग्यता को दृष्टिगत रखते हुए सम्मान स्वरुप उन्हें अन्ना यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, कल्याणी विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय, आंध्र विश्वविद्यालय, भारतीदासन छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, तेतपुर विश्वविद्यालय, कामराज मदुरै विश्वविद्यालय, राजीव गांधी प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, आई.आई.टी., दिल्ली, आई.आई. टी. कानपुर, बिडला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी, इंडियन स्कूल ऑफ साइंस, सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, मनीपाल एकेडमी ऑफ हॉयर एजुकेशन, विश्वेश्वरैया टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी ने अलग–अलग 'डॉ. आफफ साइंस' की मानद उपाधियां प्रदान की।

इसके अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरु टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी, हैदराबाद ने उन्हें 'पी.एच.डी.' (डॉ. ऑफ फिलोंसफी) तथा विश्व भारती शांति निकेतन और डॉ. बाबासाहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, औरंगाबाद ने उन्हें 'डी. लिट.' (डॉ. ऑफ लिटरेंचर) की मानद उपाधियां प्रदान की।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

इनके साथ ही साथ वे इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग एकेडमी ऑफ साइंसेज, बंगलुरु एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेज, नई दिल्ली के सम्मानित सदस्य, एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, इंस्टीट्यूशन ऑफ इलेक्ट्रानिक्स एंड टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियसे के मानद सदस्य, इंजीनियरिंग स्टॉफ कॉलेज ऑफ इंडिया के प्रोसेसर तथा इसरो के विशेष प्रोफेसर थे।

डॉ. कलाम की जीवन गाथा किसी रोचक उपन्यास के महानायक की तरह रही है। उनके द्वारा किये गये विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास के कारण उन्हें विभिन्न संस्थाओं ने अनेकानेक पुरस्कारों/सम्मानों से नवाजा है। उनको मिले पुरस्कार/सम्मान निम्नानुसार हैः–

- नेशनल डिजाइन एवार्ड : 1980 (इंस्टीटयूशन ऑफ इंजीनियर्स, भारत)
- डॉ. बिरेन रॉय स्पेस अवार्ड : 1986 (एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया)
- ओम प्रकाश भसीन पुरस्कार
- राष्ट्रीय नेहरु पुरस्कार : 1990 (मध्य प्रदेश सरकार)
- आर्य भट्ट पुरस्कार : 1994 (एस्ट्रोपनॉमिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया)
- प्रो. वाई. नयूडम्मा (मेमोरियल गोल्ड मेडल– 1996 (आंध्र प्रदेश एकेडमी ऑफ साइंसेज)
- जी.एम. मोदी पुरस्कार – 1996
- एच.के. फिरोदिया पुरस्कार–1996, वीर सावरकर पुरस्कार–1998 आदि

उन्हें राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार (1997) भी प्रदान किया गया। इसके अलावा भारत सरकार ने उन्हें क्रमशः पद्म भूषण (1981), पद्म विभूषण (1990) एवं 'भारत रत्न' सम्मान (1997) से भी विभूषित किया गया।

सादा जीवन जीने वाले तथा उच्च विचार धारण करने वाले डॉ. कलाम ने 27 जुलाई 2015 को आखिरी सांस ली। वे अपनी उन्नत प्रतिभा के कारण सभी धर्म, जाति एवं संप्रदायों की नजर में महान आदर्श के रूप में स्वीकार्य रहे है। भारत की वर्तमान पीढ़ी ही नहीं अपितु आने वाली अनेक नस्ले उनके महान व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी।

अपना कार्य स्वयं करने का प्रयत्न करें : इंग्लैंड में गली–चौराहों पर भारत की भांति कुली नहीं मिलते। एक सज्जन के पास बिस्तर, सामान आदि ज्यादा था। वह कुली को आवाज लगा रहे थे। दूसरे सज्जन ने उनकी कठिनाई को समझा और उनका सामान बग्घी पर लदवा दिया। उन सज्जन ने कुली की मजदूरी पूछी तो उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा कि वे वहां के एक बैंक के मैनेजर हैं। उनकी कठिनाई देखकर अपनी गाड़ी एक ओर खड़ी करके सहायता के लिए आए हैं। ''अरे भाई आप से क्या मजदूरी लें।'' इतना कहकर वे अपने काम पर चल दिए। भारतीय सज्जन ने ब्रिटिश समाज में दशढ़ता से जमे बैठे सुसंस्कारों की झलक एवं स्वावलंबन की महत्ता को उस दिन सही अर्थों में समझा। उन्हें अपने ऊपर बड़ी लज्जा आई। उन्होंने संकल्प लिया कि भविष्य में वे अपना प्रत्येक कार्य स्वयं ही करेंगे। अपने सामान का बोझ स्वयं उठाने में किसी भी प्रकार के अपमान का अनुभव न करेंगे। अपना कार्य स्वयं करना गौरव की बात है, लज्जा की नहीं।

महाराज सूरजमल ने एक महीने में छुड़ाया था लाल किला

पानीपत की तीसरी लड़ाई में हुए महाविनाश ने हिंदुस्तान की लगभग प्रत्येक महत्वपूर्ण शक्ति नष्ट कर डाला था। सूरज इसका मात्र अपवाद था। अब्दाली के सामने उसने न तो सिर झुकाया, न ही घुटने टेके। दोआब इलाक़े में अपना दबदबा कायम करने की नीयत से महाराज सूरजमल आगरा–किले पर कब्ज़ा करना चाहते थे। 3 मई 1761 को सूरजमल की विशाल सेना (चार हजार जाट सैनिक सैनिक) आगरा की ओर बढ़ी। लक्ष्य था आगरा का लाल किला। यह सचमुच ही शानदार इमारत है। एक महीने के घेरे के बाद 12 जून 1761 को आगरे लाल जाटों के कब्जे में आ गया तथा यह सन 1844 तक भरतपुर–शासकों के अधिकार में रहा आगरा के किले पर जाटों का कब्जा होने के बाद जाटों ने आगरा के ताजमहल में भूसा भरवा दिया और मुगल सल्तनत की तमाम ऐतिहासिक चीजों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। आगरा किले पर कब्जा करने के बाद इससे सूरजमल को नई शक्ति और प्रभुत्व प्रयास हो गया तथा वह अब यमुना के इलाक़े का शासक हो गया।

जाटों के लिए आगरा पर अधिकार भावुकता भरा क्षण था। लगभग 90 वर्ष पहले किले फाटक से कुछ ही दूर गोकला की बोटी–बोटी काट कर फेंकी गई थी। अब उसका बदला ले लिया गया था सूरजमल का स्वप्न था कि ब्रज तथा यमुना प्रदेश के जाटों को पंजाब के जाटों से मिलाकर एक कर दिया जाए। इस स्वप्न को साकार करने के लिए सूरजमल ने

हरियाणा और दोआब की ओर जाने वाली सेनाओं की कमान क्रमशः जवाहर सिंह और नाहरसिंह को सौंपी। जवाहरसिंह के अधिकार में रिवाड़ी, झज्जर और रोहतक एक के बाद एक आते गए। फारुखनगर में मसावी खां बलोच से कड़ा मुकाबला हुआ। आखिरकार 12 दिसम्बर 1763 के आसपास फारुखनगर पर भी जाटों ने कब्जा कर लिया। फारुखनगर में मसावी खां की हार और उसके बाद उसे भरतपुर में क़ैद किए जाने का मामला पराकाष्ठा पर पहुंच गया। अब नजीब के सामने सूरजमल को चुनौती देने के सिवाय कोई विकल्प नहीं बचा था। सूरजमल की विजय–यात्रा के अंतिम दौर में उसकी सुविचारित सावधानी और अभ्यास द्वारा अर्जित लचीलापन गायब हो गया।

8. वीर–गतिः वीर की सेज़ समर भूमि होती है। जब आगरा से लेकर दिल्ली के नजदीक तक सूरजमल की तूती बोलने लगी तो दुस्साहसी और महत्वाकांक्षी हो गया। उस समय शक्तिहीन मुगल सम्राट का सरंक्षक उसका शक्तिशाली रुहेला वजीर नजीबुद्दौला था, जिसे अहमदशाह अब्दाली का भी समर्थन प्राप्त था। सूरजमल ने कुछ घुड़सवारों के साथ शत्रु सेना के क्षेत्र में घुसने का दुस्साहसपूर्ण कदम उठाया। 25 दिसंबर 1763 को किसमस के दिन शाहदरा में हिंडन नदी (यमुना की एक सहायक नदी) के किनारे मुग़ल सेना के नवाब नजीबुद्दौला की सैन्य टुकड़ी के साथ मुठभेड़ में महाराज सूरजमल 56 वर्ष की आयु में वीर–गति को प्राप्त हुआ। एक विवरण के अनुसार सूरजमल अपने घुड़सवारों के साथ युद्ध–स्थल का निरीक्षण कर रहा था कि अचानक शत्रु सेना से घिरा गया। अन्य वृत्तान्त के अनुसार सूरजमल को थोड़े से आदमियों के साथ खड़ा देखकर सैयद मुहम्मद खां बलोच, जिसे सैयदु नाम से अधिक जानते थे, व उसके सैनिक सूरजमल पर टूट पड़े। शव का क्या हुआ, किसी निश्चित जानकारी नहीं। जवाहरसिंह ने कृष्ण की पवित्र भूमि गोवर्धन में अपने पिता की प्रतीकात्मक अंत्येष्टि की। इसके लिए रानी ने सूरजमल के दो दांत ढूंढ निकाले थे। अंतिम संस्कार की रस्म पूरी करने के बाद जवाहर सिंह राजगद्दी पर बैठा।

9. मूल्यांकन– जाट जाति की आंख और ज्योति महाराज सूरजमल अपने काम को अधूरा छोड़कर जीवन के रंगमंच से लुप्त हो गया। वह एक महान व्यक्तित्व और एक लोकोत्तर प्रतिभाशाली पुरुष था, जिसे 18वीं शताब्दी के प्रत्येक इतिहासकार ने श्रद्धांजलि अर्पित की है। (के.आर. कानूनगो, हिस्ट्री ऑफ द जाट्स पृष्ठ 153)

मुगलों व अफगानों के आक्रमण का प्रतिकार करने में उत्तर भारत में जिन राजाओं की प्रमुख भूमिका रही है, उनमें भरतपुर के महाराजा सूरजमल का नाम बड़ी श्रद्धा एवं गौरव से लिया जाता है। ब्रज के जाट राजाओं में सूरजमल सबसे प्रसिद्ध शासक, कुशल सेनानी, साहसी योद्धा, कुशल प्रशासक, दूरदर्शी व कूटनीतिज्ञ था। उसने जाटों में सबसे पहले राजा की पदवी धारण की थी। सूरजमल और उसके पिता बदन सिंह शुरू में सिनसिनी और थून के मामूली जमींदार थे। महाराजा सूरजमल की उपलब्धि थी कि उसने आपस में लड़ने वाले जाट–गुटों में मेल–मिलाप करवाया। उसने जाटों के रक्त एवं धन का न्यूनतम नुकसान करके विस्तृत भू भाग पर जाट–राज्य खड़ा किया। उसका राज्य विस्तृत था, जिसमें डीग, भरतपुर के अतिरिक्त मथुरा, मेरठ, आगरा, धौलपुर, मेवात, हाथरस, अलीगढ़, ऐटा, मैनपुरी, गुड़गांव, रोहतक, रेवाड़ी, बल्लभगढ़, झज्जर, फर्रुखनगर जिले थे। एक ओर यमुना से गंगा तक और दूसरी तरफ चंबल तक का सारा प्रदेश उसके राज्य में सम्मलित था। जिस दौर में अन्य राजा तो मुगलों से अपनी बहन–बेटियों के विवाह करके रियासतें व जागीरें बचा रहे थे, उस दौर में महाराजा सूरजमल अकेला मुगलों से लोहा ले रहा था।

18वीं शताब्दी के इतिहासकारों तथा वृत्तांत लेखकों ने महाराजा सूरजमल की विशिष्ट योग्यता, प्रतिभा तथा चरित्र की दृढ़ता को स्वीकार किया है। सैयद गुलाम नकवी ने अपने ग्रंथ इमाद–उस–सादात में लिखा है। नीतिज्ञता में और राजस्व तथा दीवानी मामलों में प्रबंध की निपुणता तथा योग्यता में हिंदुस्तान के उच्च पदस्थ लोगों में से आसफजाह बहादुर, निजाम के सिवा कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। उसमें अपनी जाति के सभी श्रेष्ठ गुण– ऊर्जा, साहस, चतुराई, निष्ठा और कभी पराजय स्वीकार नहीं करने वाली अदम्य भावना सबसे बढ़कर विद्यमान थे। परंतु किसी भी उत्तेजनापूर्ण खेल में, चाहे वह युद्ध हो या राजनय, वह कपटी मुगलों और चालाक मराठों को समान रूप से मात देता था। संक्षेप में कहें तो वह एक ऐसा होशियार पंछी था जो हर एक जाल में से दाना तो चुग लेता था पर उसमें फंसता नहीं था।

महाराजा सूरजमल 18वीं शताब्दी के हिंदुस्तान में व्याप्त उन पतनकारी दुर्गुणों से पूर्णतय मुक्त था जिन्होंने बड़े–बड़े राजपूत घरानों को बर्बाद कर दिया, स्वास्थ्य और बल को नष्ट कर दिया और बुद्धि को क्षीण कर दिया। राजनीतिक कौशल, संगठन, प्रतिभा और नेतृत्व के गुणों की दृष्टि से सिर्फ शिवाजी और महाराजा रणजीत सिंह ही सूरजमल से बढ़कर थे।

संदर्भः–

1. कानूनगो, के.आर., हिस्ट्री ऑफ द जाट्स; कलकत्ता, 1925

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

2. पांडे, राम; भरतपुर अप टू 1826; जयपुर, 1970
3. जाटों का नवीन इतिहास खंड 1; उपेंद्रनाथ शर्मा; जयपुर, 1977
4. जाट इतिहास; ठाकुर देशराज; आगरा, 1934
5. कुंवर नटवरसिंह; महाराजा सूरजमल; दिल्ली, 2006
6. जाटलैंड विकी

महाराज सूरजमलः ठाकुर देशराज

ठाकुर देशराज ने लिखा है... महाराजा सूरजमल – उनकी आंखों से तेज टपकता था। राजनीतिक योग्यता, सूक्ष्म दृष्टि तथा निश्चल बुद्धिमता उनमें एक बड़े अंश में विद्यमान थी। इमादुस्सादत ने उनके संबंध में लिखा है यद्यपि वह कृषक जैसा पहनावा पहनता और अपनी ब्रज भाषा ही बोलता था परंतु वास्तव में वह जाट जाति का प्लेटो था। चतुराई, बुद्धिमता और लगान तथा अन्य माल के महकमे के कार्यों की जानकारी में आशिफजाह निजाम के सिवा भारत के प्रसिद्ध पुरुषों में और कोई उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। जोश, साहस, चतुराई और अटूट दृढ़ता तथा अजय और न दबने वाला स्वभाग आदि सभी अपनी जाति के अच्छे–अच्छे गुण सूरजमल में पाए जाते थे।

उन्हें मुगल मराठा और राजपूत सभी से लड़ना पड़ा था। सभी युद्धों में वे विजई हुए। एक मुसलमान यात्री ने उनके संबंध में कहा था, सूरजमल वास्तव में हिंदुस्तान का आखिरी सम्राट है। इसमें कोई संदेह भी नहीं। उनके पास उस समय के तमाम शासकों से बड़ा राज्य था। जिस समय उनका स्वर्गवास हुआ था उस समय उनके राज्य की लंबाई 200 मील और चौड़ाई 150 मील थी। आगरा, इटावा, मैनपुरी, एटा, अलीगढ़, हाथरस, फरुखनगर, रोहतक, रेवाड़ी, गुड़गांव, मथुरा और अलवर उनके राज्य के मातहत और अंतर्गत थे। फादर वेंडिल ने उनके राज्य वैभव के बारे में इस प्रकार लिखा हैः– खजाने और माल के विषय में जो कि सूरजमल ने अपने वारिस के लिए छोड़ा है भिन्न–भिन्न मत हैं कुछ इसे 9 करोड़ और दूसरे कुछ कम बताते हैं। मैंने इसका पता लगाया है। उसका (महाराज सूरजमल का) खर्च 65 लाख से अधिक और 60 लाख से कम न था। और उसके राज्य की आमदनी 1 करोड़ 75 लाख से कम नहीं थी। उसकी सेना में 5000 घोड़े, 60 हाथी, 15000 सवार, 25000 से अधिक पैदल, 300 से अधिक तौपें, और काफी बारूद खाना तथा युद्ध की सामग्री थी। 1763 में उनका देहांत हो गया।

POSTER MAKING COMPETITION ON 25-11-2019

FOR SCHOOL GOING STUDENTS

A Poster Making Competition will be organized by JAT SABHA, CHANDIGARH/PANCHKULA for school going students on 25 November, 2019 from 10 to 11 AM in the premises of JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.

The aim of this Competition is to generate creative spirit among the children and polish the existing potential among them. To widen the scope of talent search in this field and give incentive to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories as under:-

Category A	Class III to V
Category B	Class VI to VIII
Category C	Class IX to XII

For each category there will be prizes of Rs. 2100/- , Rs. 1500/-, Rs.1100/- and remaning participated schools will be given consolation prizes of Rs. 500/-each. The topic of the Poster Competition will be "INTOXICATION THREAT TO A GIFT TO THE NATION" (नशावृत्ति राष्ट्र को खतरा) or "CLEANLINESS IS ENVIRONMENT" (स्वच्छ वातावरण जीवन दान है) चित्र में दर्शायें। Duration of the Competition will of one hour. Entries for the Competition may be sent to JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A, CHANDIGARH -160019 by post or personally by 20th November, 2019 up to 5 P.M.

Terms & Conditions of the Competition are as under :-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the Institution/School for eligibility in the Contest.
2. The participants should bring their own drawing material and cardboard. Only drawing sheets will be given by the Competition Organizers.
3. The judgment of the Chairman of the Competition will be final and binding on all.
4. The result of the Competition will be announced on the same day and prize winners will be honoured with cash awards and merit certificates on Basant Panchami.

Further enquiries may be made on Telephone Nos. 0172-2654932, 2641127, Email: jat_sabha@yahoo.com or personally from the Jat Sabha Office, at JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.- 160019.

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 02.08.94) 25/5'3" B. Ed. CTET, HTET. Employed as private teacher. Father, Mother Government servants. Brother Deputy Commandant Pilot. Preferred professionally qualified match. Avoid Gotras: Siwach, Katira, Kalkanda. Cont.: 9988643695, 9416310911, 6283129270*
- *SM4 Jat Girl (DOB 31.05.87) 32/5'5" M.A., B. Ed., M.Ed, ETT, JBT. Employed as JBT teacher in Punjab Govt. School. Father, retired from PGI Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Dalal, Dhankhar. Cont.: 9878353500*
- *SM4 Jat Girl (DOB Dec. 1988) 31/5'3" M.A (Economics), PhD (Eco.), NET cleared. Serving in Chandigarh as Assistant Professor. Father class-II officer retired from Haryana Government. Brother settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Jatrana. Cont.: 9988224040*
- *SM4 Jat Girl 27/5'4" Graduation from Kurukshetra University, GNM from Pt. Bhagwat Dayal Sharma University Rohtak. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 27/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM, Pursuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowry seeker. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali. Own flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl (12/1/1997) 5"6, BAMS finel year, Mother JBT teacher, Gotra: Siwach, Hooda, Jaglan. Cont. 9050090366*
- *SM4 Jat Girl (28/12/92) 5"7, B.Tech, M. Tech micro, Warking in go brilliant tecknology mohali. Gotra: Lathar, singhmar, faugat. Cont.: 9888646930*
- *SM4 Jat Girl (13/9/1993) 5"5, M.COM, HDFC BANK CHD, Gotra: Dahiya, Phalswal, Redhu. Cont.: 9781344936*
- *SM4 Jat Girl (21/2/1991) 5"2, CHARTERED ACCOUNTANT SENIOR AUDIT IN CHARGE. Gotra: Dahiya, Phalswal, Redhu. Cont.: 7343386770*
- *SM4 Jat Girl (18/7/1995) 5"4, M.Sc, B.Ed 2nd year. Gotra: Bhaneala, Mor, Khatkar. Cont.: 9417579207*
- *SM4 Jat Girl (26/12/88) 5"3, M.A(Eco).Phd(eco) Asstt.Professor in chd(cont). Gotra: Dahiya, Sehrawat, Jattrana. Cont.: 9988224040*
- *SM4 Jat Girl (4/12/1990) 5"2, MCA MNC at Mohali Gotra: Gulia, Malhan,Dalal. Cont.: 9780385939*
- *SM4 Jat Girl (25/10/92) 5"4, B.Tech B.H.L (CONT). Gotra: DHAYAL, PUNIA, PHOGAT. Cont.: 9416270513*
- *SM4 Jat Girl (23/07/88) 5"3, BDS. Gotra: CHAHAR, NAIN. Cont.: 7347378494*
- *SM4 Jat Girl (20/09/96) B.S.C, M.S.C. Gotra: SIHAG, BAGHRE, PANNU*
- *SM4 Jat Girl (8/6/1990) 5"3, B.Tech, MBA, working MNC COMPANY AT BANGLOR. Cont.: 9812938934*
- *SM4 Jat Girl (22.08.1990) 5"4, B.Tech. Electrical, Job in MNC NCR. Gotra: Berwal, Nain, Kataria. Cont.: 9416942029*
- *SM4 Jat Girl (30 years) 5"4, MA B.Ed, Teacher Haryana Govt. Gotra: Deshwal, Dabas. Cont.: 9868092590*
- *SM4 Jat Girl (07.08.1988) 5"4, B.Tech, SAP Consultant Private Comp. Gotra: Kakran, Rathi. Cont.: 8950116008*
- *SM4 Jat Girl (02.10.1980) (Widow) 5"4, M.Sc. M.Phil, B.Ed, Junior Lecturer, Haryana, Govt. Gotra: Nandal, Sehrawat, Dalal. Cont.: 8059220808*
- *SM4 Jat Girl (14.09.1993) 5"4, M.Com, B.Ed,Clerk Bijli Board. Gotra: Dabas, Punia, Badak. Cont.: 9417880207*
- *SM4 Jat Girl (10.03.1994) 5"3, BCA, Web Designing & Python. Cont.: Duhan, Dhanda, Punia. Cont.: 9217765326*
- *SM4 Jat Girl (18.08.1988) 5"4, M.Sc. Math B.Ed, M.ed, Teacher Private. Gotra: Bankura, Maan, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Girl (01.07.1991) 5"4, B.A, GNM Private Job. Gotra: Bankura, Maan, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Girl (24.02.1991) 5"4 MCA, Working in Yes Bank. Cont.: Chahal, Khubber, Gulia. Cont.: 9992500984*
- *SM4 Jat Girl (01.10.1993) 5"2, JBT M.A CTET, HTET, PTET, RTET Eng. Pursuing JBT Teacher (KV) Contract CHD. Gotra: Sangwan, Phogat, Pilania. Cont.: 9416869289*
- *SM4 Jat Girl (03.10.1992) 5"2, B.Sc. (Bio Tech) MSc. PHD NET qualified, Research Associate CIAB Mohali. Gotra: Khubber, Nain, Sangroya. Cont.: 9466218455*
- *SM4 Jat Girl (15.07.1991) 5"3, M. Com. B.Ed, NET JRF, Assistant Professor Govt. College Alewa Jind. Cont.: Bisla, Kundu Boora, Avoid Maan & chahal. Cont.: 9467503575*
- *SM4 Jat Girl (03.01.1994) 5"3.5, M.Sc. B.Ed, CTET, PTET APS TET, Regular Teacher in DAV School Panchkula. Gotra: Mor, Pannu, Malik, Poonia, Kataria, Nehra, Grewal, Khasa. Cont.: 9417725528*
- *SM4 Jat Girl (21.12.1989) 5"3 B.A PGDCA, Clerk in Court Panchkula. Gotra: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (17.09.1994) 5"4, M.Com B.Ed. Gotra: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (18.07.1994) 5"3, B.Tech Computer, Assistant Manager on Contract DPR. Gotra: Chahal, Lohan, Nain. Cont.: 9417474128*
- *SM4 Jat Girl (29.08.1996) 5"6, B.Com LLB. Gotra: Maan, Malik, Chahal. Cont.: 9216760135*
- *SM4 Jat Girl (05.07.1990) 5"7, MDS. Gotra: Narwal, Mor, Kadyan. Cont.: 8556074464*
- *SM4 Jat Girl (11.06.1991) 5"3, MA History, Accountant Contract. Gotra: Phour, Panghar, Singroha. Cont.: 8054348430*
- *SM4 Jat Girl (16.08.1991) 5"1, Architect Practice Assosciate at IIHS Delhi. Gotra: Moun, Jhorar, Barala. Cont.: 9416239533*
- *SM4 Jat Girl (20.09.1996) 5"3, M.Sc. Physics. Gotra: Sihag, Bagri, Pannu. Cont.: 9416190541*
- *SM4 Jat Girl (23.07.1988) (Divorcee) 5"3, BDS. Gotra: Chahar, Nain. Cont.: 7347378494*
- *SM4 Jat Girl (05.07.1994) 5"5, B.Sc B.Ed, Contract Teacher*

Private School PKL. Gotra: Sangwan, Sehrawat, Kalhar. Cont.: 9417787441

- *SM4 Jat Girl (15.02.1995) 5"5, MA English. Gotra: Malik, Panghal, Sindhu. Cont.: 9466727505*
- *SM4 Jat Girl (15.03.1989) 5"3, BAMS, District Health Officer, Karnal. Gotra: Nain, Kundu, Pannu. Cont.: 8930955259*
- *SM4 Jat Girl (06.08.1984) (Divorcee) 5"4, LLB, LLM, Govt. ADA Panchkula. Gotra: Beniwal, Sangwan, Kataria. Cont.: 9466615979*
- *SM4 Jat Girl (22.10.1992) 5"3, M.Sc. Math B.ed, Teacher in Chandigarh UT. Gotra: Deshwal, Boora, Dhankar. Cont.: 9999318098*
- *SM4 Jat Girl (14.12.1991) 5"4, M.Sc. Chemistry, Assistant Professor, Jat College, Rohtak. Gotra: Kadyan, Sarahaya, Dhankar. Cont.: 9467793049, 7888653335*
- *SM4 Jat Girl (13.12.1994) 5"5, B.Tech ECE, Private Job. Gotra: Dahiya, Bazard, Tehlan. Cont.: 8146030258*
- *SM4 Jat Girl (09.12.1993) 5"5, B.Com, PGDCA, Tuition at home. Gotra: Basak, Panwar, Deshwal. Cont.: 8699648145*
- *SM4 Jat Girl (04.06.1993) 5"5, MA English, Two year diploma in fasion designing Private job. Gotra: Nehra, Narwal, Duhan. Cont.: 9417746305*
- *SM4 Jat Girl (01.08.1996) 5"2, M.Sc. Food Science, LPU. Gotra: Nehra, Narwal, Duhan. Cont.: 9417746305*
- *SM4 Jat Girl (25.09.1996) 5"3, B.Sc (medical), M.Sc(Botany). Gotra: Gill, Lather, Sangwan. Cont.: 9416990930*
- *SM4 Jat Boy (DOB 03.10.92) 27/5'11" Employed in Army as Major. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Pannu, Sindharh, Loura. Cont.: 9888142240*
- *SM4 Jat Boy (DOB 12.08.91) 28/5'8" Working in coast guard Deputy Commandant (Pilot). Father, Mother Government servants. Well settled family. Avoid Gotras: Siwach, Katira, Kalkanda. Cont.: 9988643695, 9416310911, 6283129270*
- *SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 26/6'1" B.Tech. Employed as Mechanical Junior Engineer in Steel Strips Wheel Ltd. Land 5 acre. House in Try-city. Avoid Gotras: Nehra, Kadyan, Dhull, Ahlawat, Malik, Dalal, Saroha. Cont.: 9876602035, 9877996707*
- *SM4 Jat Boy (DOB 30.01.91) 28/6'1" B.Tech in CSE. Employed in MNC Gurgaon. Avoid Gotras: Puwar, Ruhil, Beniwal.Cont.: 9560280060*
- *SM4 Jat Boy (20/05/93) 6"3, RAILWAY SECTION CONTROLLER AT BIKANER. Gotra: PUNIA, HOODA, RATHI*
- *SM4 Jat Boy (6/8/1991) 5"6, B.Tech(ece), INIT COMPANY CHD. Gotra: DAHIYA, RUHELLA, RUHIL. Cont.: 9467806085*
- *SM4 Jat Boy (14/10/86) 5"10, B.Tech, PEC(CHD), MBA (FIN)CFA, U.S.BANK BANGLORE. Gotra: MOR, GHALAWAT, RATHI. Cont.: 8360609162*
- *SM4 Jat Boy (2/11/1980) 6"1, Matric Self work (agriculture). Gotra: Pawar, Chahal, Ghanghas, Rathi, Ahlawat. Cont.: 9317958900*
- *SM4 Jat Boy (17/09/89) 5"8, B.Tech (elt) Project officer (Class 2) Haryana renewal eng. dept Mohil. Gotra: Karwasra, Bhuria. Cont.: 9417250704*
- *SM4 Jat Boy (29/09/90) 5"7, M.Sc Dy. Manager, PNB. Gotra: Dhawan, Gehlawat, Ahlawat. Cont.: 9812022426*
- *SM4 Jat Boy (25/12/89) 5"10, M.Sc, M.Phill, M.Ed, B.Ed, Assistant Profess at Diet, Delhi. Gotra: Dhawan, Gehlawat, Ahlawat. Cont.: 9812022426*
- *SM4 Jat Boy (24.07.1992) 5"6, BA, LLB Advocate. Gotra: Sangwan, Deshwal. Cont.: 9466116108*
- *SM4 Jat Boy (21.03.1997) 5"8, Persuing BAPrivate Job. Gotra: Berwal, Nain, Kataria. Cont.: 9416942029*
- *SM4 Jat Boy (1991) 5.1, B.A, Railway Clerk. Gotra: Maan Dahiya, Sehrawat. Cont.: 9868879229*
- *SM4 Jat Boy (25 years) 5"9, B.A, Clerk in DGP Office Panchkula. Gotra: Dalal, Dhull, Panghal. Cont.: 9467864515*
- *SM4 Jat Boy (22.08.1990) 5"8, B.Tech, Senior Enginer Govt. of India. Gotra: Redhu, Nara, Lather. Cont.: 9815188255*
- *SM4 Jat Boy (15.12.1991) 5"8, B.Tech. Gotra: Dabas, Punia, Badak. Cont.: 9417880207*
- *SM4 Jat Boy (14.10.1987) 5"1, B.Tech Mechenical M.Tech Production Engg. Design Engineer in Construction Bridge line. Gotra: Sehrawat, Kinha, Shokeen. Cont.: 9417555130*
- *SM4 Jat Boy (26.06.1991) 5"9, B.Tech, Civil Private Job, Gurgaon. Gotra: Rajyan, Nandal, Jakhar. Cont.: 9255525278*
- *SM4 Jat Boy (08.05.1996) 5"9, MCA Private Job Mohali. Gotra: Chikara, Sangwan, Salkhan. Cont.: 9855538128*
- *SM4 Jat Boy (1994) 6"3, B.A., Assistant Manager Kotak Mohindra Bank, PKL. Gotra: Sindhu, Malik, Tehlan. Cont.: 9872716234*
- *SM4 Jat Boy (1991) 5"7, B.A. Clerk In Haryana Civil Secretariat, CHD. Gotra: Gehlan, Antil, Sehrawat. Cont.: 9991838091*
- *SM4 Jat Boy (09.12.1996) 5"7, B.A., Personal Assistant in HUDA, Panchkula. Gotra: Duhan, Dhanda, Punia, Goyat. Cont.: 9217765326*
- *SM4 Jat Boy (28.05.1993) 6"3, Railway Collector. Gotra: Punia, Hooda, Rathi. Cont.: 9416721303*
- *SM4 Jat Boy (03.05.1991) 5"8, B.Tech, ECE, Clerk in District Court Ambala. Gotra: Deshwal, Kadyan, Malik. Cont.: 9878541622, 6463114852*
- *SM4 Jat Boy (29) 6"2, 10+2, Private work of accountant. Gotra: Dahiya, Pahal, Beniwal. Cont.: 9896507808*
- *SM4 Jat Boy (06.08.1991) 5"11, B.A., Govt. Contractor. Gotra: Maan, Sangwan, Ruhil, Deshwal, Dalal. Cont.: 9034227010*
- *SM4 Jat Boy (12.05.1991) 5"11, B.Tech NIT KKR Civil M. Tech. PEC CHD, J.E in Haryana Govt., Public Health Deptt. Haryana, PKL. Gotra: Sheokand, Mor, Phogat. Cont.: 9417208936*
- *SM4 Jat Boy (29.11.1991) 5"1, B.Tech, Private job IN MNC. Gotra: Dahiya, Bazard, Tehlan. Cont.: 8146030258*
- *SM4 Jat Boy (21.02.1993) 5"7, B.Tech, Assistant Manager PNB. Gotra: Gulia, Dabas, Kalkal. Cont.: 7015278957*
- *SM4 Jat Boy (28.11.1989) 6"0, B.Tech, Job in IT park Chd. Gotra: Malik, Pahal, Nain*
- *SM4 Jat Boy (13.12.1990) B.Tech(CSE), Business. Gotra: Punia, Saral. Cont.: 8725994564*

जिंदगी की जिम्मेदारी कोई बोझ की चीज नहीं है। वह आनंद से ओत–प्रोत है। – विनोबा भावे

राजा नाहर सिंह के ऐतिहासिक महल में शराब का बार हुआ बंद, लोगों में खुशी

– हरपाल सिंह राणा

बल्लभगढ़ फरीदाबाद 1857 की क्रांति के महानयक में से एक अमर शहीद राजा नाहर सिंह के ऐतिहासिक महल में वर्ष 1993 में हरियाणा सरकार के तत्कालीन उपायुक्त के. के. जालान और तत्कालीन विधायक गजेंद्र सिंह मिश्रा ने महल के जीर्णोधार के लिए बल्लभगढ़ ब्यूटीफिकेशन सोसाइटी का गठन किया। वर्ष 1996 से 1999 तक यहां पर हरियाणा पर्यटन निगम ने कार्तिक उत्सव के नाम से कार्यक्रम आयोजित किए।

राजस्व विभाग के द्वारा पर्यटन विभाग को भूमि स्थानांतरित करते वक्त दिनांक 27 नवंबर 2019 को हुए समझौते के अनुसार पर्यटन विभाग को सिर्फ इसमें सामाजिक कार्य के लिए ओपन थिएटर खोलना और महल का रखरखाव करना था।

बाद में 27 सितंबर 2003 को हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला ने विश्व पर्यटन दिवस पर राजा नाहर सिंह के महल पर हेरिटेज होटल का शुभारंभ किया तब से होटल में बार का संचालन होता आ रहा है।

बताया जाता है इस होटल पर अनापत्ति गतिविधियां हुआ करती थी जिसका विभिन्न मौकों पर विरोध हुआ पर पर्यटन विभाग ने इसे बंद नहीं किया।

वर्ष 2017 से राजा नाहर सिंह अभियान के संस्थापक संयोजक हरपाल सिंह राणा द्वारा महल में चल रहे बार को बंद करवाने का अभियान आरंभ किया और बल्लभगढ़ के आसपास के गांव में जाकर स्थानीय लोगों और युवाओं से संपर्क कर लोगों को महल में चल रहे होटल–मोटल और बार के खिलाफ जागरूक करने का काम किया कि कैसे ऐतिहासिक धरोहर पर नियमों के विरुद्ध शहीदों के अपमान पर राज्य सरकार बार का संरक्षण कर रही है और राणा इस बात को समझने में सफल रहे। साथ ही स्थानीय नेताओं से लेकर प्रधानमंत्री राष्ट्रपति और राज्य सरकार से पत्राचार जारी रखा।

केंद्र सरकार द्वारा इस विषय पर कार्रवाई करने की बात भी कही गई लेकिन हरियाणा सरकार द्वारा बार बंद करने को लेकर टाल–मटोल ही करती रही।

लेकिन प्रधानमंत्री कार्यालय के द्वारा गत 2 जनवरी हरियाणा सरकार से इस संबंध में जवाब मांगा, जवाब ना देने पर दूसरी बार 20 मार्च 2019 को हरियाणा सरकार से सख्त लहजे में पूछा कि अब तक आपने इस पर क्या कार्रवाई करी है और कार्यवाही की रिपोर्ट भेजे।

इसके बाद 11 अक्टूबर 2018 को हरियाणा सरकार के टूरिज्म विभाग द्वारा बताया गया अगर राजा नाहर सिंह के महल मे चल रहे बार को बंद किया गया तो हरियाणा सरकार को राजस्व की हानि होगी इसलिए शराबखाना बंद नहीं किया जा सकता।

जिसके विरोध में राजा नाहर सिंह अभियान द्वारा अप्रैल 2019 से राजा नाहर सिंह शहीद पार्क महल बल्लभगढ़ में अप्रैल 2019 से समय–समय पर उपवास कर राज्य सरकार को इस बात पर सैकड़ों लोगों द्वारा कड़ा विरोध दर्ज कराया। उपवास व विरोध कार्यक्रमों में अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद के पोते अमित आजाद महान स्वतंत्रता सेनानी राजा महेंद्र प्रताप के पोते चरत प्रताप सिंह सहित कई संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकर्ता शामिल हुए, साथ ही अनेकों शहीद परिवारों पर कार्य करने वाली संस्थाएं और शहीद परिवारों ने भी अपना समर्थन दिया संस्था द्वारा प्रयास और तेज किया गया जिस में हस्ताक्षर अभियान से लेकर पत्राचार उपवास और ज्ञापनों द्वारा अपनी बात केंद्र और राज्य सरकारों तक रखी गई, जिसे सरकार पर दबाव बना और इसके चलते ही हरियाणा सरकार द्वारा चल रहे बार को बंद करना पड़ा, बार बंद होने के बाद जब हरपाल सिंह राणा मौके पर पहुंचे तो उनको बार कर्मियों की नाराजगी झेलनी पड़ी। कर्मचारियों ने कहा कि अब हम कहां नौकरी करेंगे, हमें पता नहीं कहां पर स्थानांतरित कर दिया जाएगा और अपनी भड़ास निकालते हुए उन्होंने कहा कि यह बार आप के आंदोलन से बंद नहीं हुआ है, इसे सरकार की नीति के तहत बंद किया गया।

राजा नाहर सिंह के महल में बार को बंद करवाने में इन लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, इनमें हरपाल सिंह राणा, नई दिल्ली, लखनऊ से पधारे अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद के भतीजे अमित आजाद, राजा महेंद्र प्रताप सिंह के पौत्र चरत प्रताप सिंह, राजा नाहर सिंह फाउंडेशन के संयोजक नरवीर सिंह तेवतिया, राष्ट्रीय जाट एकता मंच भारत के अध्यक्ष वीरपाल सिंह जाट, जाट महान पत्रिका के संपादक व राष्ट्रीय जाट एकता मंच के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष राजबीर राज्यान, जिला परिषद के सदस्य अवतार सिंह सारंग, जाट एकता मंच हरियाणा के अध्यक्ष वीरपाल धरीवाल, हरियाणा व्यापार मंडल के प्रधान प्रेम खट्टर, जजपा नेता लखन बेनीवाल, शशिबाला तेवतिया, इतिहासकार डॉ. धर्मचंद विद्यालंकार, संजीव लाकड़ा आदि ने अहम भूमिका निभाई।

हृदय की कोई भाषा नहीं होती। हृदय से बातचीत करता है। – महात्मा गांधी

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। यात्री निवास की साईट की निशानदेही लेकर चार दीवारी बनाने का कार्य चल रहा है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्रि निवास भवन का निर्माण अक्तूबर 2019 में शुरू किया जा रहा है।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फ्रवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फ्त सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह-सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172-2654932, 2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर-6, पंचकूला
फोन : 0172-2590870, Email: jatbhawanpkl6@gmail.com

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।